सन १९०८-९ में ११९३ औन्स मालियती १३३८३) की और सन १९०९-१० में १०७४ औंस कीमती ९०६२) की कोकेन हिन्दुस्तान में आई।

Cochineal (कोचीनियल)—किमिंजी, किरिम दाना। यह एक क़िस्म के छोटे कीड़े होते हैं जो थूहड़ के पेड़ों पर फैलते हैं। यह इतने छोटे होते हैं कि आधसेर तौल में लगभग ७० हजार से ज्यादा होते हैं। मादीन कीड़ों को बटोर कर सुखा लेते हैं और पीसकर रंगने के काम में लाते हैं। इस रंग की पेश्तर बड़ी क़दर थी मगर जबसे अनीलीन रंग चला है तबसे इसकी मांग कम हो गई है।

सन् १९०९-१० में यह १,८७०००) का २३०४ हंडरवेट आया जो पिछली साल से बहुत कम है बलके करीब करीब आधे के।

Cocoa, Cacao (कोको, ककाव)—यह एक क़िस्म का पेड़ होता है इसके फल खीरे की तरह होते हैं और बीज से पीले रंग का गाढ़ा तेल निकलता है जिसकी सुगंधि मनभावनी होती है चोकोलेट में इसी की सुन्दर महक रहती है। इस तेल को ककोबटर [Cacao Butter] कहते हैं।

अब नारियल के तेल से भी एक क़िस्म का मक्खन निकलता है उसे भी कोको बटर (cocao butter) कहते हैं मगर दोनों में फ़र्क़ है। कोको के बीज को ख़ास तरीक़े पर भूनकर उसके आटे से कोको बनता है जो चाय की तरह पिया जाता है। इन बीओं को कोको निब्ज़ या बीन्ज़ [coco nibs or beans] कहते हैं इनकी बड़ी मांग और बिक्री होती है। इनको पीसकर मैदा और मसाले मिलाकर चाकलेट तयार होती है। अब यह पेड़ गर्म मुल्कों में होने लगा है।

Cocoa butter, Cocoa Oil (कोको बटर, कोको आयल)—नारियल का तेल, गरी का तेल।

Cocoa nut (कोको नट)—नारिकेल, नारियल, नरियल, नरेल,। यह पेड़ ताड़ की तरह ऊंचा समुद्र के किनारों पर बहुत होता है। नारियल के पेड़ की हर चीज़ व्यापार के काम की होती हैं। इसके फल के

गरी से तेल निकाला जाता है, वह खायी भी जाती है और उसकी मिठाइयां बनती हैं। फलके चारों तरफ़ जो रेशे रहते हैं उन्हें नारियल की जया कहते हैं। रस्से व टाट बनते हैं, गद्दे भरने वग़ैरा के काम भी आता है। इस पेड़ की लकड़ी धरन का काम और नालियों का काम देती है और पानी में सड़ती गलती नहीं। इसका तेल लगाया जाता है और बाला जाता है और उससे ऐसा साबून बनता है जो खारी पानी में भी फेन देता है। इसकी खोपड़ी से हुक्के, कटोरे, डब्बे, बटन, अनेक भांती की चीज़ें बनती हैं। इसके पत्ते से छप्पर छाए जाते हैं। इसकी सीखों से अच्छी झाड़ू बनती है। इसके फल के अंदर का खोपड़ा या गोला विदेशों को बहुत जाता है जिसमें से नारियल का तेल और मक्खन निकाला जाता है। ताज़े कच्चे फल याने डाब का पानी मीठा और जिगर को तर करने वाला होता है। बंगाल में डाब का जल बहुत पीते हैं।

नारियल के गोले २१,४९,०००) रुपए के सन् १९०९-१० मे विदेशों को रवाना हुए और गरी का तेल सन् १९०८-९ में लगभग ४०,३२,०००) का और सन् १९०९-१० में ३७,६३,०००) का रवाना किया गया।

सन् १९०९-१० में ४३,५००) के ताजे नारियल हिन्दुस्तान में आए।

Cocoa nut oil (कोको नट आयल)— नारियल का तेल, गरी का तेल। सन् १९०९-१० में ४०,३२,०००) और १९०९-१० में ३७,६३,०००) का बृटिश इंडिया से रवाना हुआ।

Cocus wood (कोकस उड)—Kokra देखो।

Cod (काड)—एक क़िस्म की मछली है जो हालेंड, इंगलेंड, स्वीडेन, नारवे व आइसलांड में बहुत होती है, लोग इसे शौक़ से खाते हैं। इस से तेल निकाला जाता है जिसे काडलिवर आयल (Cod liver oil) कहते हैं। यह मछली ३ फ़िट लंबी और ६ सेर वज़न तक की होती है।

Cod liver oil (काड लिवर आयल)—काड नामक मछली के जिगर का तेल। यह तेल कई जाति की मछलियों के जिगर से निकाला जाता है।

यह फ़ायदे की दवा है और बहुत इस्तेमाल की जाती है। यह चीज़ न्युफौंडलैंड, नारवे और ग्रेट बृटन् में बहुत बनती हैं।

Coerulein—एक क़िस्म का हरा रंग जो ऊन वग़ैरा रंगने के काम आता है। गलीन [Gallein] और गंधक के तेज़ाब के संयोग से बनता है। छींट छापने के काम में बहुत आता है।

Coffee (काफ़ी)—काफ़ी, क़हवा। इसके पेड़ कई जाति के होते हैं। हिन्दुस्तान में यह पेड़ जावा, सुमात्रा, सिलोन, फ़िलिपाइन टापू, मद्रास व बम्बे में होता है। यह चाय की तरह पी जाती है, इसकी बहुत बड़ी बिक्री है। इसके पीने से फ़ुरती आती है, आलस्य दूर होता है और नींद कम आती है। इसके सत को काफीन (coffeine) कहते हैं। यह हर साल एक करोड़ रुपए से ऊपर की हिन्दुस्तान से बाहर जाती है, खास करके मद्रास से।

सन् १९०५-६ में १,७५,६७,२४०) की चलान हुई।
„ १९०८-९ में १,३८,९९,७९९) „ „
„ १९०९-१० में १,०९,६४,०३७) „ „

Cognac (कागनेक)—यह सबसे अच्छी शराब समझी जाती है। इसे फिन शाम्पेन (fin champagne) भी कहते हैं। यह क़ीमती मिलती है। यह फ्रान्स में बहुत तयार की जाती है। Brandy देखो।

Coir (कॉयर)—नारियल की जटा के रेशे को कहते हैं। यह बहुत ज्यादा मज़बूत होते हैं। इनके रस्से, टाट, ब्रश, पैरपोछने इत्यादि अच्छे बनते हैं। सिलोन में इसका कारोबार बहुत होता है। इंगलैंड व अमेरिका में इसकी बड़ी मांग है। खासकर जहाज़ी रस्से इसके खूब मज़बूत बनते हैं।

Coix (काय)—इसे जाब्ज़ टीयर्ज़ (Job's tears) भी कहते हैं। हिन्दी में गुगर, जरगदी, शक्रू, फोंकी, कसी, केसई, दामू दाऊद, दामू, आयूब इत्यादि कहते हैं। इस पेड़ की कई किस्में हैं। इसके दानों की माला बनती है और इसका आटा खाया भी जाता है। इसे खाने या पीने से

खून साफ़ होता है। बम्बई में इसे 'कस्सई' बीया कहते हैं। इसके दानों से कंठे, माला वगैरा बनाए जाते हैं और इन्हें परोकर पिटारियां वगैरा सजाई जाती हैं। इसका अच्छा व्यापार होता है।

Coke (कोक)—अधजला पत्थर का कोयला। कोक प्रायः गेस निकाले हुए कोयले को कहते हैं। बाजार में जो कोक बिकता है वह यही है। उमदा कोक पत्थर के कोयलों को बंद बरतन में रखकर फूंक देने से बनता है जैसे लकड़ी से लकड़ी का कोयला बनता है! यह देर में सुलगता है और इस की खूब तेज आंच रहती है और धूआं नहीं रहता। यह कड़ा व ठस कोयला होता है और इसके छूने से हाथ में करखा नहीं लगती।

सन् १९०८-९ में १६५६ टन और सन १९०९-० में १८३४ टन हिन्दुस्तान से गया।

Colchicum (कॉलचिकम)—सूरनजान। यह पेड़ हिमालय के पश्चिम भाग में होता है। असल सूरनजान दूसरी चीज़ है और फ़ारस से आती है, मगर इसमें भी लगभग वही फ़ायदा पाया जाता है और बाजार में यही ज्यादातर बिकता है। रावलपिंडी में 'कुल दाना' कहाता है। यह दवा में काम आता है।

Collodion (कालोडियन)—गनकाटन को ईथर और अलकोहल में मिलाने से बनता है। कपास को शोरे और गंधक के तेज़ाब में गलाने से गनकाटन तयार होती है। कोलोडियन कई तरह का होता है और जर्राही और फ़ोटोग्राफ़ी में बहुत काम आता है।

Colocynth (कालोसिंथ)—इन्द्रायन। यह फैलने या चढ़ने वाली बेल है जो सिंध, डेराइस्माईलखां, मुलतान, भावलपुर वगैरा, और मध्य और दक्खिनी हिन्दुस्तान में जंगली पाया जाता है। यह बड़ा सुन्दर नारंगी का सा फल, चमकदार, चिकना व हरे रंग का होता है और पकने पर पीला हो जाता है। यह बहुत कड़ुआ और दस्तावर होता है और दवाओं में इस्तेमाल किया जाता है। इसकी मांग बिलायत में बहुत है। सिमरना से खास करके बहुत जाता है।

Colophony (कालोफ़ोनी)—गंदाबिरोजा, राल, तारपीन। तारपीन का तेल निकालने पर जो स्याह रंग की मैल रह जाती है उसी को कालोफ़ोनी कहते हैं। यह चीज सारंगी की तार पर मलने के काम में लाई जाती है।

Colza (कोलज़ा)—एक प्रकार की सरसों। सरसों के दानों को पेरकर तेल निकाला जाता है। पेश्तर यह तेल बाला जाता था मगर जबसे मट्टी का तेल चल गया है तबसे यह बालने में कम आता है पर खाने में अब भी इसतेमाल होता है और अब महंगा भी हो गया है। सरसों की खली मवेशियों को खिलाई जाती है और यह बड़ी अच्छी खाद होती है। हिन्दुस्तान से करोड़ों रुपये की सरसों हरसाल विदेशों में जाती है। सन् १९०३-४ में २,५३,४१,०१०) की, सन १९०४-५ में २,७३,३७,७३२) की, सन १९०६-७ में २,४६,७०,६१७) की चलान हुई।

Comb (कूम्ब)—कंघी, ककही। बालों में फेरने और सुलझाने के लिए महीन या मोटे दांते का एक औजार। यह सींग, हाथी दांत, हड्डी, लकड़ी, चन्दन, कचकड़े, रबड़, गटापरचा, धातु और ज़ाईलोनाईट (Xylonite) की बनती हैं। सबसे ज्यादा सींग की कंघीयां बनाई जाती हैं और प्रायः मशीन से तयार की जाती हैं। इस देश में प्रायः सींघ, हाथीदांत, लकड़ी और चन्दन की कंघियां लोग हाथ से बनाते हैं, तौभी लाखों रुपए की हरसाल बाहर से आती है।

Conch (कौंच)—शंख, शम्बुक। ट्रांवकोर, टूटीकोरन, सिलोन के समुद्र से ग़ोताख़ोर लोग निकालते हैं। हिन्दुस्तान में इसकी बहुत बिक्री है। टूटीकोरन में सरकार की तरफ़ से इसके निकालने का ठीका नीलाम होता है। लगभग डेढ़ लाख साल का ठीका होता है। दहनावर्त शंख बहुत कम मिलता है और उसकी बड़ी क़ीमत होती है। एक प्रकार का गुलाबी शंख भी होता है जिसमें से चिपटे गुलाबी मायल मोती निकलते हैं।

Copaiba, Copaiva (कोपैबा, कोपैवा)—यह पेड़ अमेरिका में होता है

उसकी राल और तेल अंगरेज़ी दवा में काम आती है और दस्तावर होती है। छापे की स्याही में भी पड़ती है।

Condurango bark (कांडूरांगो बार्क)—अमेरिका देश के एक लतर की छाल है। यह ज़हरीले जानवर के विष को दूर करती है। दवा के काम आती है।

Copal (कोपाल)—संदरस, सफ़ेद डामर। Indian copal, White Dammars, Malabar Tallow, Piney varnish नाम का पेड़ कनारा से ट्रावंकोर तक होता है। यह राल पेड़ में पछना देकर निकाली जाती है जो तारपीन या अलकोहल में घुल जाती है। इसके सिवाय और भी कई पेड़ों से कोपाल निकाली जाती है। यह ज्यादा तर बारनिश बनाने के काम आता है। कोपाल बारनिश मशहूर है। यह कहरोबा की सूरत की राल है। ज़ंजीबार, अमेरिका वग़ैरा से ज्यादा चलान होती है।

Copper (कॉपर)—ताम्बा। यह मशहूर धातु है और खान से निकाला जाता है और खालिस नहीं पाया जाता। जिस खनिज पदार्थ में से ताम्बा निकाला जाता है उसे ताम्र-माक्षिक (Copper pyrites), ताम्राश्म (Copper glance) वे तांब्रमल (Malachite) कहते हैं। ताम्बा बहुत ज्यादा युनाइटेड स्ट्रेट में निकलता है और कुछ पोर्चुगल व आस्ट्रिया से भी आकर स्वांसिय (Swansea) नगर के कारखानों में तयार होता है। यह लाल रंग का धातु है, इसपर पालिश खूब होती है और इसमें एक क़िस्म की मध्यम महक भी होती है। हवा में इसका रंग बदल जाता है और इसका हरा रंग हो जाता है और आग में डालने से आग की ज्वाला भी हरी होती है। यह धातु पत्तर और तार बनने क़ाबिल और चिम्मड़ और कड़ा होता है। इसमें बिजली और गरमी खूब दौड़ती है इसलिए बिजली के यंत्र तारबरक़ी वग़ैरा में यह बड़े काम की चीज़ है। शोरे और गंधक के तेज़ाब में यह गल जाता है। इस धातु के मेल से कई तरह की मिलवां धातु बनती हैं, जैसे कांसा, फूल, पीतल वग़ैरा। सोने में ज़रासा इसका मेल दे देने

से सोना लाली मायल हो जाता है। ताम्बे और गंधक के मेल से नीला थोथा या तूतीया बनता है, जो छींट रंगने व तांबे की कलई करने के बहुत कामकी चीज़ है। सिर्के के संयोग से ज़ंगार (Verdigris or Acetate of Copper) बनता है। ताम्बा पेश्तर हिन्दुस्तान में भी बहुत निकाला जाता था मगर अब कम निकाला जाता है। सिंघभूम, चांदा, गढ़वाल, आसाम और बिलोचिस्तान में इसकी नई खानें पाइ गई हैं। छोटा नागपुर में इसकी बड़ी बड़ी खानें पुराने ज़माने की खुदी पाई जाती हैं। अब तो यह धातु विदेश से करोड़ों रुपए की हर साल हिन्दुस्तान में आती है। सिंघभूम और शिकिम में कम्पनियां क़ायम हुई हैं मगर अभी ताम्बा निकालने का काम नहीं शुरू हुआ है।

पिटवां ताम्बा २,४६,००,०००) का ४४४९८४ हंडरवेट सन १९०९ में और २,३२,००,०००) का ४४१६१५ हंडरवेट सन १९०९-१० में आया। ढलवां ताम्बा ३१,९२,०००) का ६३,९७३ हंडरवेट सन १९०९-१० में हिन्दुस्तान मे आया। हिन्दुस्तान से ताम्बे का धातुमूल ४३८०१३ टन ७५,९७,०००) का सन १९०८-९ मे और ५००३४४ टन ७९,१०,००००) का गया।

Copperas (कॉपरास)—हीरा कसीस। यह सल्फेट आफ़ आयरन या ग्रीन विट्रियल (Sulphate of iron or Green vitriol) भी कहाता है। रंगने या रोशनाई बनाने के काम ज़्यादा आता है। यही ग्रीन कॉपरस (Green Copperas) भी कहाता है। यह पानी में ख़ूब घुल जाता है। न्यारिये इस से सोना साफ़ कर के और धातुओं से अलग करने के काम में लाते हैं।

Copper glance, Copper pyrites (कापर ग्लान्स, कापर पाइराइट)—यह वह मिट्टी है जिन से तांबा निकाला जाता है। इन शब्दों की हिन्दी यदि ताम्र-माक्षिक (Copper pyrites) और ताम्राश्म (Copper glance) बना ली जाय तो अनुचित न होगा। Copper देखो।

Copra (कॉपरा)—नारियल का गोला, खोपड़ा। सूखे नारियल के अन्दर

का गोला सिलोन और हिन्दुस्तान से बहुत चलान होकर बाहर जाता है, जिससे गरी का तेल निकाला जाता है। हिन्दुस्तान में कोई बड़ा कारखाना इसका नहीं है हालांकि यह यहां ज़्यादा पैदा होता है।

सन् १९०९-१० में यह २१,४९,०००) का रवाना हुआ।

Copralites (कॉपरालाइट)—चन्द ऐसे जानवरों के (जो अब नहीं पैदा होते) गोबर या मैले को जो सूख कर पत्थर हो गए हैं। कॉपरेलाइट कहते हैं। यह कई शकल सूरत का होता है और पहाड़ों व ज़मीन के अन्दर में पाया जाता है। इस से खाद बनाई जाती है।

Coquilla Nut (कॉकीला नट)—यह एक क़िस्म के पेड़ का बीज है जो अमेरिका में पैदा होता है। इसकी लकड़ी पर अच्छी पालिश होती है इसलिए उससे बटन, छड़ी, छाते का दस्ता या मूठ वग़ैरा तयार होते हैं।

Coral (कोरल)—मूंगा, मरजान। यह एक क़िस्म की समुद्री कीड़ों की हड्डी है। इसी में कीड़े रहते हैं। यह रत्न समझा जाता है। मूंगे के दाने बनते हैं और गहनों में जड़ा जाता है। यह मेडिटरेनियन समुद्र से निकाला जाता है। यह बड़ा सख्त होता है और इस पर पालिश खूब होती है। उमदा मूंगा बड़े क़ीमत से बिकता है। फॉसिल कोरल (Fossil Coral) को संगे यहद कहते हैं।

Coralline (कोरेलीन)—फ़ेनोल पर गंधक के तेज़ाब और आक्ज़ालिक एसिड का असर पड़ने से एक क़िस्म का लाल रंग पैदा होता है। इस रीति से जो चीज़ पहिले बनती है उस रंग को औरीन या यलो कोरेलीन (Aurin or yellow coralline) कहते हैं। इस औरीन (Aurin) को अलकोहलिक अमोनियां के साथ गर्म करने से पिओनिन या रेड कोरेलीन (Peonine or Red Coralline) तयार होता है। कागज़ रंगनेवाले औरीन (Aurin) रंग को बहुत इस्तेमाल करते हैं। अब उन रंगने और कपड़े छापने में पिओनीन (Peonine) बहुत काम आता है। 'पिओनीन' में मेगानिशिया का

भस्म (Calcined Magnesia) मिलाने पर खासा तेज़ सुर्ख़ रंग, जिसे 'टर्की रेड' (Turkey Red) कहते हैं, बन जाता है।

Cardite (कॉरडाइट)—गन काटन और नाइट्रो-ग्लीसरीन और थोड़ा सा वेसीलीन मिला देने से एक भक से उड़ जाने वाली बारूद बनती है। नाइट्रो-ग्लिसरीन (Nitro-glycerine) में उसका छठां भाग एसेटिक ईथर (Acetic Ether). मिलाकर तब गन-काटन (gun-cotton) मिलाया जाता है और लेई सा कर लिया जाता है। तब मशीन में दबाकर उसके रेशे रेशे बना लेते हैं। यह चीज़ आज काल कारतूस बनाने के काम आती है। नमी का असर इस पर कम पड़ता है मामूली बारूद से इस में यह एक विशेषता है।

Coriander (कोरियण्डर)—धनिया। यह कुल हिन्दुस्तान में थोड़ा बहुत बोआ जाता है। इसकी सुगंधी अच्छी होती है। धनिया की पत्ती की चटनी इत्यादि बनती हैं। इसके बीज गर्म मसाले में खुशबू के लिए इस्तेमाल होते हैं और उनसे तेल भी निकाला जाता है। यह दवा के काम में लाई जाती है।

Cork (कॉर्क)—कॉर्क, काग। यह पेड़ स्पेन और पोरचूगल में बहुत पैदा होता है और अलजीरिया व टूनिस (Tunis) से भी आता है। जब २५ साल का पुराना हो जाता है तब इसकी छाल काटी जाती है, यह काम बड़ी इहतियात से किया जाता है। हज़ारों टन हर साल विलायत जाता है। इससे बोतल बंद करने का काग, लाइफ़बोट वग़ैरा बनाते हैं। इसकी छीलन और टुकड़ों से अब लिनोलियम (Linolenm) 'कार्क का तख़्ता' बनता है। हिन्दुस्तान में एक पेड़ 'शिशमिली' या 'सिरमिली' नामका होता है असल में यह (Seshame) शेशामी है लेकिन इसे (Aschynomene Indica) भी कहते हैं। इससे भी लाइफ़बोट वग़ैरा वैसीही हल्की बनाई जा सकती है जैसे कि कार्क से। इससे शोला टोपी भी बन सकती है मगर तअज्जुब है कि इसकी टोपी बनाने का खयाल अब तक किसी ने नहीं किया।

Cork wax (कार्क व्याक्स)—शोला की मोम। शोला में क्लोरोफ़ार्म का प्रयोग देकर यह मोम निकाली जाती है।

Cornel (कॉर्नेल)—एक किस्म का चेरी वृक्ष । इस की लकड़ी बहुत सख्त होती है ।

Coromandel wood (कारोमंडल उड)—कालमंदर । यह आबनूस या तेंदू पेड़ के जाति का पेड़ सिलोन और दक्खिन में होता है। इसकी लकड़ी की बहुत क़दर है और हिन्दुस्तान से बिलायत बहुत जाती है। यह वृक्ष कारोमंडल में समुद्र के किनारों पर बहुत होता है ।

Corozo (कोरोज़ो)—यह एक क़िस्म के खजूर का पेड़ है जो मध्य और दखनी अमेरिका में होता है । इसके फल में से जो दूध निकलता है वह जम जाने पर हाथी दांत की तरह कड़ा हो जाता है। इसलिए इसे वेजेटेब्ल आइवरी नट (Vegetable ivory nut) भी कहते हैं। इससे बटन, मूठ, दस्ते वग़ैरा बनाए जाते हैं । यह चीज़ खास करके इक्वेडर और कास्टा रिका देशों (Ecudor and Costa Rica) से आती है ।

Corrosive Sublimate (कॉरोसिव सबलाइमेट)—रसकपूर । इसे बाइक्लोराइड आफ मर्क्यूरी (Bichloride of Mercury) या मर्क्यूरिक क्लोराइड (Mercuric chloride) भी कहते हैं । क्लोराइड और पारा मिलाकर यह बनता है । यह तेज़ ज़हर है और चीज़ों को सड़ने से बचाने के लिए काम आता है ।

Corrugated iron (कॉरुगेटेड आयर्न)—Galvanized iron देखो ।

Corundum (कोरंडम्)—कुरंड, समद, एमरी-स्टोन (Emery-stone) भी कहाता है । इसकी रंगीन और स्वच्छ जाति में मानिक और नीलम और पुखराज हैं । इस पत्थर के कण निहायत सख्त होते हैं । हीरे से उतर कर यही एक कड़ा पत्थर है । यह मैसूर और मद्रास में मिलता है और हिन्दुस्तानी हकाक इसे जवाहिरात काटने या उन पर सान या पालिश देने के लिए बहुत ज़माने से काम में लाते हैं । एशिया माइनर, चीन, और युनाइटेड स्टेट में बहुत मिलता है अब नक़ली कुरंड 'बाक्साइट' (Bauxite) से भी तयार किया जाने लगा है ।

Cotton (काटन)—कपास, रुई। नबाताती रेशों में यह सब का राजा है। कपास बहुत बोई जाती है। दुनियां भर में इसकी मांग और क़दर है। कपास की दो क़िस्में हैं एक का बिनौला रोंएंदार सफ़ेद और दूसरे का बीया काला होता है। इन की कई जाति हैं और उनकी भी जूदी जूदी क़िस्में हैं। हिन्दुस्तान में जो रूई बोई जाती हैं उनके बारे में मुफ़स्सल हाल लिखने के लिए एक अलग किताब चाहिए, फिर भी मुख्तसर में उनके नाम और पैदाइश की जगह बता देना मुनासिब है। भूमध्य रेखा से ३६ अक्षांश तक यह हर देश में बोई जाती है।

(१) हीरा गुनी कपास (Gossypium Stocksii) यह करांची में होती है।

(२) देव कपास, मर्मा, मनुआ, बजैरा, राम कपास वग़ैरा यह सब जूदी जूदी क़िस्में हिन्दुस्तान में मानी जाती हैं परन्तु अंगरेज़ी में यह एकही जाति (G. arboreum) में गिनी जाती हैं इसी की और क़िस्मों में (क) लाल फूल वाली कपास (G. Sanguinea) भी है और हिन्दुस्तान में हर जगह होती है, (ख) दूसरी क़िस्म विलायती-खांदेश या केटेली या जरी या जाड़ी (G. Neglecta) कहलाती है, (ग) तीसरी क़िस्म (G. Assamica) है जिसे 'किल' या 'बोरकपाह' या 'खूंगी' या 'देवा' कहते हैं और यह गारो पहाड़ में होती है, (घ) चौथी क़िस्म 'नुरदकीं' (बंगला नाम), 'बरदी', 'कटील-विलायती', 'नीबारी', 'बगई' (सिहलट में) कहाती है, अंगरेज़ी में इसे (G. Rosea) कहते हैं।

(३) जापानी कपास (G. Nanking) इस की छ क़िस्में हैं।

(४) (G. Obtusifolium) इस की रूई मटमैली होती है और इस की भी कई जाति हैं जैसे (क) 'काहनामी' या 'देशी' जो बरोच, सूरत और बरोदा में होती है, (ख) 'गोघरी' यह घटिया रूई बरोदा और बरोच में बोई जाती है, (ग) 'कुम्ता', यह माराष्ट्र देश में होती है, (घ) 'उप्पम' यह टिनीवली और कोयम्बटूर में होती है

इसी जाति की दोनसली रूई भी कई क़िस्म की होती है, जैसे 'जोआरी-हट्टी' जो करनूल और बेलारी की तरफ़ होती है। इनके अलावा और कई जाति की कपास दूसरे देशों से आकर अब बोई जाने लगी हैं, जैसे सी-आईलेंड (Sea-Island) अमेरिका की कपास इत्यादि। सिंध प्रान्त की आबोहवा इजिप्ट देश से बहुत मिलती है इसलिये वहां इजिप्ट की कई क़िस्म की बड़े रेशों की कपास, जैसे ब्लाक-रैटलर (Black rattler), पेटर्किन (Peterkin), ग्रिफिन (Griffin), ट्रायंफ (Triumph) वग़ैरा अब बोई जाने लगी हैं और अच्छी होती हैं। सरकार की तरफ़ से तजुरबे हो रहे हैं। रियाया भी इन्हें बोने लगी है। इसकी तरक्की के लिये यह ज़रूरी है कि इन रूई के खरीद लेने वाली एजंसियां क़ायम हों। इन रूइयों के दाम अच्छे मिलते हैं। कपास के रेशों से जिसे रूई कहते हैं सूत और कपड़े बनते हैं। इस के बीज से, जो 'बिनौले' कहाते हैं, तेल निकाला जाता है। इस तेल की क़दर अभी हिन्दुस्तानी लोग कम जानते हैं, मगर यह तेल बहुत काम की चीज़ है।

व्यापार में बड़े छोटे रेशों इत्यादि के अनुसार रूई की क़िस्में जो व्यापाराना मंडियों में होती हैं वह ११ तरह की हैं उनका क्रम यह है।

(१) Fine (फ़ाइन) (२) Good (गुड) (३) Good fair (गुड फ़ेयर) (४) Fully fair (फुली फ़ेयर) (५) Middling fair (मिडलिंग फ़ेअर) (६) Good middling (गुड मिडलिंग) (७) Middling (मिडलिंग) (८) Low midling (लो मिडलिंग) (९) Good ordinary (गुड आर्डिनरी) (१०) Ordinary (आर्डिनरी) (११) Inferior (इनफ़ीरियर)। नमूना या भाव के साथ F या F. G. या G. M. या M. इत्यादि लिखा रहता है, उस का यही मतलब है कि वह किस क़िस्म की रूई है। अमेरिका की रूई में सब से अच्छी रूई न्यू आरलियन (New Orleans) या सी-आइलेंड (Sea-island) रूई होती है। बहुत बारीक सूत इन्हीं से काते जाते हैं।

हिन्दुस्तान में कदाचित सब से उत्तम 'फाईन बरोच' नाम की रूई है। इजिप्टकी रूई (Egyptian Cotton) याने मिस्र की रूई मुलायम और रेशमी होती है पर रंग उसका भूरा होता है । बारीक सूत कातने के काम आती है ।

सूत बनाने के बड़े बड़े कारखाने हर देशों में हैं और इसी प्रकार कपड़े बिनने के भी। हिन्दुस्तान में सूबा बम्बई इस कारोबार में सब से बढ़ा चढ़ा है । रूई के रद्दी खुचड़े या फ़ुज़ले जो मिलों में बटुरते हैं उन से बत्तियां, सुतलियां वग़ैरा बनती हैं ।

हिन्दुस्तान से रूई के चालान का ब्योराः—

सन् १९०५-६ में २१,३४,१५,१९५) की कपास गई ।
„ १९०६-७ में २१,९७,८४,६०९) की „
„ १९०७-८ में २५,७०,२५,०००) „
„ १९०८-९ में १९,७६,८५,०००) „
„ १९०९-१० में ३१,२७,७१,०००) „

कपास की काश्त कुल बृटिश इंडिया में १,२९,५८,९७५ एकड़ सन १९०८-९ में थी।

हिन्दुस्तान की मिलों में लगमग ६१६४८०० हंडरवेट सन १९०८-९ में और ५८८१५०० हंडरवेट सन १९०९-१० में इसी देश की बोई कपास खरीदी गई (सन १९०९-१० में रूई का भाव तिगुना से ज्यादा हो गया था क्योंकि अमेरिका की फ़स्लि कम हुई थी इसलिए हिन्दुस्तानी मिलों ने रूई कम खरीदी) इसके अलावा सन १९०८-९ में ५३,०३,०००) की १२५४८७ हंड० और सन १९०९-१० में ३३,५८,०००) की रूई ९३९९४ हंडरवेट विदेशों से आई थी ।

Cowry (कौरी)—कौड़ी । पचास साल पहिले हिन्दुस्तान में कौड़ी सिक्के की तरह काम में बहुत लाई जाती थी और अब भी देहातों और ग़रीबों में इसका चलन है परन्तु आगे से इसका व्यवहार बहुत कम हो गया है ।

Crab's eye (क्रॉब्ज़ आई)—गुंजा, घुंघची। इसकी लतर बड़ी सुन्दर होती है। इसके लाल लाल सुन्दर बीज जौहरियों और सोनारों में तौलने के काम आते हैं। इसी की जड़ मुलहठी कहाती है। इसके बीज में सर्प के बिष की तरह एक क़िस्म का जहर होता है, दुष्ट चमार लोग इसे पानी के साथ पीसकर सूई की तरह नोकीली सलाई बना लेते हैं जो मवेशियों के किसी मुलायम अंग में चुभो देने से वह मर जाते हैं।

Crape (क्रेप)—क्रेब। यह बारीक झिरझिरा कपड़ा कच्चे रेशम, विशेष करके उसके खुद या फुज़ले से बनता है। इसके तयार करने की तरकीब गुप्त रक्खी गई है।

Cream (क्रीम) - मलाई, बालाई। वास्तव में इसे दुग्धसार याने दूध का सार कहना चाहिए। दूध कुछ देर पड़ा रहने से उसके ऊपर चिकनई इकट्ठी हो जाती है, यही दूध की चिकनाहट या दुग्धसार है। अब मशीन से यह दुग्धसार झट अलग करके निकाल लिया जा सकता है। इसी दुग्धसार से मक्खन और घी बनता है। मशीन से मथ कर कच्चे दूध से क्रीम याने दूध का सार निकाल लेते हैं और बचा हुआ दूध फिर भी पीने क़ाबिल बच जाता है। विलायत में 'क्रीम' कई तरह से तयार होती है।

[१] Whipped cream (व्हिप्ड क्रीम)—अंडे की सफ़ेदी और ताज़े दूध या क्रीम को मथ कर बनाते हैं।

[२] Devonshire cream (डेवनशियर क्रीम)—ताज़े दूध को चौड़ी कढ़ाई में गर्म करके देर तक पड़ा रहने देते हैं दूध में उबाल नहीं आने देते। बाद को मथकर क्रीम याने बालाई उतार लेते हैं।

[३] Vanilla cream (वेनीला क्रीम)—क्रीम में जब शक्कर और अण्डे की सफ़ेदी मिलाकर तयार करते हैं तब उसे वेनीला क्रीम कहते हैं।

[४] Cream cheese (क्रीम चीज़)—उमदा क्रीम को साफ़ और तर कपड़े में बांधकर कई दिन तक ठंडी जगह में टांग देते हैं

बाद महीन कपड़े में बांधकर रखते हैं और फिर ठप्पे से उसकी टिकिया बना लेते हैं। इसका नाम 'क्रीम चीज़' है।

Cream of tartar (क्रीम आफ़ टार)—यह क़लमीं बाइ टारटेरट आफ़ पोटाश (Crystallized Bitartrate of potash) है जो अंगूर के मीठे रस में रहता है और अलकोहल के साथ नहीं घुलता बलके धीरे धीरे आरगल (Argol) बनकर नीचे बैठ जाता है। इस 'अरगल' को उबलते पानी के साथ घोलकर कोयले के संयोग से उसकी मैल साफ़ कर लेते हैं, ठंडा होने पर सफ़ेद सफ़ेद क़लमें क्रीम आफ़ टारटार की जम जाती हैं। शराब के पीपों में आप से आप जम जाती है। यह दस्तावर दवा है।

Creosate (क्रिओसेट)—लकड़ी को कशीद करने पर एक तरह का तेल निकलता है जो कियासोट कहलाता है। कोलटार से भी निकाला जाता है। इससे मांस जल्दी सड़ता नहीं; दांत के दर्द वग़ैरा में भी यह फ़ायदा करता है। रेल के लकड़ी के स्लीपर पर लगा देने से लकड़ी बहुत दिनों तक नहीं गलती सड़ती।

Cretone (क्रीटोन)—एक प्रकार की छींट। फ्रेंच छींट, परदे, तोशक तकिये, गद्दे इत्यादि इसके बनते हैं।

Crocin (क्रोसिन)—ज़ाफ़रान का रंग। यह ज़र्द रंग का सफ़ूफ़ होता है।

Crocus (क्रोकस)—एक क़िस्म का रूज। कांच के बरतन में नाइट्रिक एसिड (शोरे का तेज़ाब) में शुद्ध रांगा डाल दे, यह तप उठेगा और धूआं देने लगेगा (इसका धुआं ज़हरीला है इससे बचा रहे) जब सब रांगा जल जाय और सफ़ेद बुकनी जो बच रहे उसे घरिया (Hessian crucible) में तपा कर तेज़ाब का असर जला कर निकाल दे। इस बुकनी में अलसी के तेल मिलाने से सख़्त व उमदा सीमेंट बन जाता है।

Croton oil (क्रोटन आयल)—जमाल गोटा का तेल। 'जमालगोटा', 'जयपाल', 'कनकफल' नाम का एक पेड़ हिन्दुस्तान के जंगलों या पुर्बी बंगाल, आसाम वग़ैरा में होता है। इसके फल का तेल बड़ा दस्तावर होता है। यह फल बिलायत बहुत जाता है।

Crown glass—Glass देखो ।

Crucible (क्रूसिबुल)—धातु वा शीशा गलाने की घरिया । घरिया की मिट्टी प्रायः कड़ी आंच खाने वाली होती है । बारीक मिट्टी, ग्राफ़ाइट वा चूने के मेल से बनती है ।

Cryolite (क्रिओलाइट)—यह एक खनिज पदार्थ है जो यूरल पहाड़ों में मिलता है । पहिले इसी में से अलूमीनियम निकाला जाता था पर अब इससे फिटकरी और बाइकारबोनेट आफ़ सोडा ज्यादा निकाला जाता है । काच बनाने में भी यह पदार्थ बहुत काम आता है ।

Crystal glass—Glass देखो ।

Cubebs (क्यूबेब)—कबाब चीनी, तिमुई वग़ैरा कहाती है । इसका पेड़ ज्यादातर जावा या मारिशस में होता है । हिन्दुस्तान में भी थोड़ा बोआ जाता है । इसका तेल (Oil of cubeb) कबाब चीनी का तेल निकाला जाता है और बहुत बिकता है । पुराने पेड़ से कपूर की तरह के डले निकलते हैं जिसे कबाब चीनी का कपूर (Camphor of cubeb) कहते हैं ।

Cubic nitre (क्यूबिक नाइटर)—Nitre देखो ।

Cucumber (ककम्बर)—खीरा, ककड़ी, फूट । यह कई क़िस्म की लतर होती है । इसके रस की एक उमदा तेज़ दवा विलायत में बनती है । इसकी तरकारियां खाई जाती हैं । इसके छोटे अध कच्चे फल को गेरकिन या घेरकिन (Gherkins) कहते हैं और उनका आचार या मुरब्बा विलायत में बहुत बनता है अतः घेरकिन पिक्ल अगर इस देश में बनाया जाय तो अंगरेज़ लोग इसे खुशी से लें ।

Cudbear (कड्बेयर)—यह एक क़िस्म की लाल रंग की बुकनी है, जिस से रंग रंगा जाता है पर रंग कच्चा होता है । कुछ दिनों बाद फीका पड़ जाता है ।

Lecanora Tartarea नाम का पेड़ स्वीडन और नारवे में होता है उसकी लकड़ी से यह रंग निकाला जाता है ।

Cummin (क्यूमिन्)—कमून, ज़ीरा, ज़ीरक। याद रहे कि मामूली ज़ीरे और कमून में फ़र्क है। यह ज्यादातर मोरक्को और माल्टा से आता है। हिन्दुस्तान में भी कई ज़िलों में बोआ जाता है। हिन्दुस्तान से यह चलान भी बहुत होती रहती है। सन १९०९-१९१० में २२२१६१ रु० का, सन १९०३-४ में ४०३८७५ रु० का और सन १९०५-६ में ५००५३५ रु० का चलान हुआ था। सिलोन में बहुत जाता है।

Curacoa (क्यूरेको)—यह एक क़िस्म के नारंगी के छिलके की शराब है।

Cutch (कच, कथ)—Catechu देखो।

Cutler's Cement (कटलर्ज़ सीमेंट)—४ भाग राल को १ भाग मोम और १ भाग ईंट के चूर में मिलाकर तयार करे। (२) १६ भाग राल, १६ भाग चूना (गर्म), १ भाग मोम। (३) ४ भाग पिच, ४ भाग चरबी घटिया, ईंट का चूरा। दस्ते के छेद में भर कर चाक़ू का बेंट गर्म करके डालने से मसाला धर लेगा।

Cutlery (कट्लरी)—कट्लरी। चाक़ू, क़ैंची, छुरी वग़ैरा चीज़ों को कटलरी कहते हैं। फ्रांस, जरमनी और इंगलैंड में इनका बहुत बड़ा व्यापार है॥

हिन्दुस्तान में विदेश से कटलरी बहुत आती हैं जिनके आमदनी की तफ़सील यह है:—

सन् १९०७-८ में १८,७९,६२७) रु० की
,, १९०८-९ में १७,५१,७१४) रु० की
,, १९०९-१० में १४,७७,३९६) रु० की

Cyanide of Calcium (सायनाइड आफ़ कालशियम)—यह मसाला जब कि सायनाइड आफ़ पोटाशियम के ब्याथ (baths) में पैदा हुये कार्बोनेट को विकृत व ध्वंस करना होता है तब इस्तेमाल किया जाता है। यह मसाला सूखा नहीं होता और गरमी पाकर खराब हो जाता है इसलिये ताज़ा ही तयार करके काम में लाना अच्छा होता है। खूब ज्यादा कास्टिक चूने के घोल में प्रूसिक एसिड डाल कर टपका लेने पर जो रस छनकर निकल आते हैं वही सायनाइड आफ़ कालशियम है।

Cyanide of Copper (सायनाइड आफ़ कापर)—यह मसाला भूरे रंग का सफ़ूफ़ होता है। ताम्बे के जो क्षार घुल जाया करते हैं उनमें यलो प्रूशियट आफ़ पोटाश (Yellow prussiate of potash) मिला कर तयार किया जाता है। इसके अलावा और कई तर्कीब से तयार होता है। अधिक सायनाइड मिलाने से तड़ित द्वारा ताम्बा चढ़ाने के काम आता है।

Cyanide of Gold (सायनाइड आफ़ गोल्ड)—यह एक ज़र्द रंग का सफ़ूफ़ है। खूब गाढ़े सल्फ़ाइड आफ़ गोल्ड में गाढ़ा सायनाइड आफ़ पोटाशियम तयार किया जाता है। गोल्ड व्याथ में काम आता है मगर महंगा पड़ता है इससे तो कहीं ज्यादा अच्छा काम गोल्ड अमोनियम से होता है।

Cyanide of Potassium (सायनाइड आफ़ पोटाशियम)—एलक्ट्रोप्लेटर याने बिजली द्वारा मुलम्मा करने वालों के लिए यह सब से ज़्यादा काम का मसाला है। खालिस और उमदा सायनाइड बनाने में बहुत झंझट पड़ता है, उमदा नं० १ का कहाता है और मामूली सायनाइड नं० २ का होता है। ठंडा मुलम्मा करने के लिये यह बहुत बड़े काम की चीज़ है। जितनाही यह ख़ालिस होगा उतनाही अच्छा काम होगा।

Cyanide of Silver (सायनाइड आफ़ सिलवर)—यह सफ़ेद रंग का मसाला है मगर रौशनी पाकर धीरे धीरे स्याह हो जाता है। पानी में या ठंडे तेज़ाब में नहीं घुलता अलबत्ता तेज़ाब गर्म करने पर घुलता है। नाइट्रेट आफ़ सिलवर में हाइड्रो-सायनिक एसिड मिलाने से यह तयार होता है और जो तलछट नीचे बैठ जाती है उसे खूब धोकर काले या नीले बोतल में बंद रखते हैं। सायनाइड और प्रूसियेट मिलाने से इसका डबल साल्ट बनता है और सल्फाइट, क्लोराइड और हाइपो-सलफाइट के मिलाने पर वह विकृत हो जाता है।

D.

Damask (डमश्क)—दमिश्क़ का एक कपड़ा, जामदानी। एक ख़ास क़िस्म की बिनावट का कपड़ा जिसमें दस्तकारी के काम याने बेल बूटे बिने हुए होते हैं। अब यह काम 'जाकर्ड लूम' (Jacquard loom) मशीन से बनता है। रेशमी, ऊनी और सूती होता है, लेकिन क्षाणिक (linen) याने अतसी के रेशे का ज़्यादा तयार किया जाता है और मुक़ाम ब्रांसले (Bransley); डुंफ़रम्लीन (Dunfermline) और बेलफ़ास्ट (Belfast) नगर में ख़ास कर बहुत तयार किया जाता है। सूती 'डमस्क' मंचेस्टर, ग्लासगो और पेश्ली मुक़ाम के कारख़ाना में, और ऊनी 'डमस्क' हालीफ़ेक्स (Halifax) व ब्राडफ़ोर्ड (Bradford) में और रेशमी 'डमस्क' लंडन के आस पास के कारख़ानों में बिना जाता है।

Dammar (डामर)—डामर गोंद या डामर राल। हिन्दुस्तान में कई क़िस्म के पेड़ों से यह राल निकलती है।

(१) सफ़ेद डामर, नकली कहरुबा (White Dammar, Piney Varnish, Indian Copal or Malabar Tallow) यह एक क़िस्म की राल है, जिस पेड़ में यह होती है उसके हिन्दुस्तानी नाम यही हैं जो ऊपर लिखे गए हैं। यह पेड़ बम्बई प्रान्त में और कनारा से ट्रावंकोर तक के पहाड़ों में होते हैं, जहां यह पीनमरम्, धूपमरम्, पेनी पेर्मीन, धूपद इत्यादि कहलाते हैं। पेड़ में पछना देकर यह राल निकाली जाती है। यह तारपीन के तेल वा ईथर में बख़ूबी घुल जाती है, लेकिन अलकोहल में कम घुलती है। इस पेड़ के बीज से तेल निकाला जाता है जिसे पीनी टैलो या वेजेटेब्ल बटर आफ़ कनारा (Piney Tallow or Vegetable Butter of Canara) कहते हैं। यह तेल वाला और खाया जाता है और घी में मिलाकर बेचा जाता है। इसकी राल से मोमबत्तियां बनती हैं और उस से 'नक़ली

कहरूबा' भी बनता है। इस की लकड़ी से डोंगियां इत्यादि बनती हैं, इस से प्याकिंग केस व पट्टियां भी बनाई जा सकती हैं।

(२) Black Dammar (Canarium Strictum)—काला डामर, गुगुल, कुन्द्रीकम, मद धूप, राल धूप को कहते हैं। यह वृक्ष कोकन के दक्खिन भाग में होता है। यह राल भी बारनिश वग़ैरा बनाने के काम आती है और बरगंडी पिच (Burgundy pitch) की जगह भी काम में लाई जाती है।

(३) Bee's Dammar—इस के नाम कुन्ती, कुन्तली, कोटे, नसरी, बकुआं वग़ैरा हैं और बर्म्हा देश में 'प्वे न्ये' कहाती है। यह एक क़िस्म के मक्खी के छत्ते की मोम है और कई तरह की होती है। अलमोड़ा, बेलगांव, छिंदवाड़ा, बेतूल, सम्भलपूर वग़ैरा में यह मोम बहुत बटोरी जाती है। इस की कई क़िस्में अलग अलग गिनी जाती हैं।

(४) Amboyna or White pine—कौड़िया डामर, थीटस्येन (बर्म्हा)। यह (Agalhis Loranthifolia) नामक पेड़ से निकलती है और यह बर्म्हा व मालय द्वीप में पैदा होती है। यह बारनिश बनाने या मोमजामा तयार करने के काम आती है।

असल डामर सिंगापुर से बहुत चलान होती रहती है। असल डामर को लहसुन्या राल या गोंद (gum cat's eye) भी कहते हैं। यह सब स्वच्छ राल होती हैं और उनसे उमदा बारनिश तयार होती है जो जल्द सूख जाती है।

कहीं कहीं यह राल ज़मीन में पुराने समय की दबी हुई 'फासिल' (fossil) रूप में भी पाई जाती है और इसकी बहुत क़दर और तिजारत होती है।

Dammar Varnish (डामर बारनिश)—डामर की बारनिश। १० भाग डामर, ५ भाग संदरस, १ भाग मस्तगी को २० भाग तारपीन के तेल में धीमी आंच पर घुलावे (बीच बीच में चला दिया करे)। घुल जाने पर स्पिरिट आफ टरपेनटाइन (Spirits of turpentine) इतना मिलावे कि यह गाढ़ी शरबत सी हो जाय।

Dalbargia (डलर्बार्जिया)—यह एक क़िस्म का पेड़ है, इसकी उमदा लकड़ी ज़िस्सल (स्वेतसाल) या सीसू (D. latifolia) कहाती और बहुत अच्छी होती है। यह पेड़ छोटा नागपुर, नैपाल, अवध, मध्य प्रदेश वग़ैरा में होता है। इसकी लकड़ी को ब्लाक उड या रोज़ उड आफ़ सौथ इंडिया (Black wood or Rose wood of S. India) भी कहते हैं। इस जाति के कई पेड़ हैं और लकड़ियां मज़बूत होती हैं।

Date palm (डेट पाम)—खजूर, छुहारा। इसका पेड़ उत्तरीय अफ़रिका, पच्छमी एशिया और दक्खनी योरोप में होता है। इसके फल सुखा कर चलान किए जाते हैं। खजूर से शक्कर तयार होता है और हिन्दुस्तान में खाया जाता है। इस पेड़ के रेशों से रस्सा वग़ैरा बटा जाता है और पेड़ के रस से ताड़ी नाम का नशीला रस निकाला जाता है। इसकी गोंद 'हुक्माचिल' कहाती है और पंजाब में दवा के काम आती है। इस की लकड़ी से छड़ियां भी बनती हैं इस के अलावा पानी बहने की नालियां और कभी कभी छप्पर की कांड़ी भी बनाई जाती हैं, पंखे भी बनाते हैं। पूना की तरफ़ एक क़िस्म का खजूर होता है जो 'शालू' कहाता है उसकी चटाइयां बनती हैं।

सन् १९०९-१० में डेट मेवा ५४,८०,०००) का और १९०८-९ में ४६,३०,०००) का आया।

Datura (डटूरा)—धतूरा। इस पेड़ की कई क़िस्में हैं पर दो क़िस्में ज़्यादा मशहूर हैं।

(१) काला धतूरा, ऊदा धतूरा, (Datura fastuosa)—यह गर्म मुल्कों में हर जगह पाया जाता है।

(२) सफ़ेद धतूरा (D. alba or D. Stramonium)—यह दवा के काम में बहुत आता है। काशमीर से शिकम तक और बिलोचिस्तान में बहुत होता है। पंजाब में इसे टट्टूर और अफ़ग़ानिस्तान में कचोला कहाता है, यह ज़हरीली उन्मत्त करने वाली चीज़ है।

Deadly Nightshade (डेडली नाइटशेड)—Belladona देखो।

Deal (डील)—३ इंच मोटे और ९ इंच चौड़े तख्तों को 'डील' कहते हैं।

Deals (डील्ज़)—डील लकड़ी। यह लकड़ी बाल्टिक के बन्दरगाहों से चलान होती है।

Deccan Hump (डेकन हम्प)—अम्बारी, पटसन, मेस्तापात। यह एक क़िस्म का जूट है और बम्बे प्रेसीडंसी, मध्य प्रदेश और मद्रास प्रान्त में इस की काश्त बहुत होती है और छोटे नागपुर की तरफ़ भी होता है और बंगाल में यह 'मेस्ता पाट' के नाम से मशहूर है। इसे केनाफ (Kanaff) और अम्बारी हेम्प (Ambari Hemp) भी कहते हैं। यह जूट से भी उमदा गिना जाता है। इस से रस्से, बोरे, बेग वग़ैरा बनाए जाते हैं। इसी के एक क़िस्म का रेशा बिमलीपटन जूट (Bimlipatan Jute) के नाम से मशहूर है, इस की बहुत मांग विलायत में रहा करती है।

Dextrine (डेक्सट्रीन)—इसे ब्रिटिश गम (British gum) भी कहते हैं। स्टार्च याने फ़ालूदे को खूब तेज़ आंच पर हलके एसिड के संयोग से तयार करते हैं। देखने में यह स्टार्च सरीखा मालूम देता है लेकिन इस की पहचान यह है कि 'आयोडीन' (Iodine) मिलाने से 'डेक्सट्रीन' (Dextrine) का रंग नहीं बदलता। छींट वग़ैरा छापने में कीकर की गोंद की जगह यह बहुत इस्तेमाल किया जाता है और कपड़े चिपकाने या नफ़ीस चीज़ें चिपकाने के काम में लाया जाता है। पोस्टेज़ स्टाम्प या लिफ़ाफ़े चिपकाने में भी इस का इस्तेमाल होता है, मानो यह एक प्रकार की स्वच्छ लेई है जो खास तौर पर तयार की जाती है।

नुसखा—१ रतल माल्ट को थोड़ा कूट कर २ रतल गर्म पानी में मिलावे और १४५ डिगरी फ़हरनाइट तक गर्म करे फिर इस में ५ रतल आलू का मैदा मिलाकर १६० डिगरी तक गर्म कर और २५ मिनिट तक हल करे कि वह घुल मिल कर पतली हो जाय। तब इसे फ़ौरन उबाले। ३ या ४ मिनिट उबल जाने पर छान ले

और भाप की गर्मी से सुखा लें। इसे ब्रिटिश गम (British gum) या बनावटी गोंद (Artificial gum) कहते हैं।

Dextrose (डेक्सट्रोज़)— Glucose देखो।

Diamond (डायमंड)— हीरा, अलमास। रत्न या जवाहिरात में सब से ज़्यादा चमकदार और क़ीमती पत्थर है। इस की क़द्र क़ीमत उस की रंगत, वज़न, चमक दमक, बेऐब नग और ख़ास कर के सुन्दर काट छांट के होने से बढ़ जाती है। यह संग सब से ज़्यादा कड़ा होता है। यह हीरे का ही काम है कि मानिक या नीलम को काट सकता है। नक़ली हीरा बनाने की कोशिश वैज्ञानिक रीति से बराबर हो रही है पर अब तक इस में कामयाबी कम हुई है। हिन्दुस्तान, ब्राज़ील और सौथ अफ्रिका में हीरा पाया जाता है और बड़ी बड़ी खानें हैं। बहुत घटिया हीरे को Bort या Boart कहते हैं और इस के चूरे से हकाक लोग नगों के घाट काटते हैं। काला हीरा बहुतही ज़्यादा कड़ा होता है और पहाड़ की चट्टान काटने के काम आता है।

हीरे के विषय में एक लेख हमारा 'सरस्वती' के अंक मे छप चुका है उस में पूरी तरह से इसके ऐब, घाट वग़ैरा का हाल बताया गया है। हीरे के नग की काट छांट और घाट की बनावट के मुताबिक़ कई नाम होते हैं जैसे 'मनका' (Diamond bead), कंवल (Brilliant), हीरे का गोशवारा या तावीज़ (D. drop), पोलकी (Rose), परब (D. table), कैरा हीरा (Rough diamond), कनी [Mele] जब हीरे का नग चौथाई करात यी १ ग्रेन से कम तौल में हो तो वह हीरे की "कनी" कहलाती है।

Diapar (डायापर)—एक ख़ास क़िस्म का कपड़ा जिसकी बिनावट ख़ास तर्ज़ की तौलिया बिनावट की सी होती है।

Dill (डिल)—सोआ, सुलफ़ा। यह साग खाया जाता है। इसके बीज से, तेल निकालकर उमदा ख़ुश्बूदार साबुन बनाया जाता है। तेल कशीद करके निकाला जाता है।

Dioptose (डायपटेज़)—Emerald देखो ।

Divi divi (डिवी डिवी)—दिवी दिवी । यह सौथ अमेरिका का पेड़ है इसकी ढोंढ़ी से कसाव निकलता है जो चमड़ा पकाने और कपड़ा रंगने के काम में आता है ।

Dolomite (डोलोमाइट)—एक क़िस्म का संगमरमर का सा पत्थर है, जिसमें से चूना बहुत निकलता है ।

Dragon's blood (ड्रागन्ज़ ब्लड)—ख़ून ख़राबा । यह कई क़िस्म के बेंत की ताज़ी छड़ में से रंगदार रस या राल निकलती है। यह कई क़िस्म के बेंत के फल में से भी निकलता है, लेकिन खासकर गोला बेंत की एक जाति में जिसे अंगरेजी में (Daemonorops Kurzianus) कहते हैं, यह बहुत पाया जाता है । यह लता अंडामन टापू में होती है ।

नकली खून ख़राबा भी बहुत आता है खास करके पीनांग, सुमात्रा वग़ैरा से । फल को उबालकर जो राल निकाली जाती है वह घटिया होती है ।

Driers (ड्रायर्ज़)—उन मसालों को ड्रायर्ज़ कहते हैं जिनके मेल से रंग रौग़न जल्द सूख जाता है । जैसे मुर्दासंग, सफ़ेदा (Sugar of lead), सफ़ेद तुतिया [White Copperas), संदुर वग़ैरा । बहुत रंग रौग़न ऐसे होते हैं जो जल्दी नहीं सूखते उन में थोड़ा सा ड्रायर्ज़ मिला देने से वह जल्द सूख जाते हैं । जल्द सूख जाने वाला तेल इस तरह तयार करें कि १ गेलन अलसी का तेल और ½ पाव मुर्दासंग बारीक मिलाकर २ घंटे तक धीरे धीरे उबालें जब फेन आना बंद हो जाय तब ठंडा करके रखले ।

Drying oils [ड्राइङ्ग आयल]—३ पैंट साफ़ पानी में २ रतल खसखस का तेल और १ औंस सफ़ेद तूतिया [White vitriol] मिलाकर मट्टी के नांद में धीमी आंच पर उबालें [तेज़ उबाल न आने पावे] जब आधा या दो तिहाई पानी जल जाय तब एक कांच के बरतन

में उंडेल लेवे और पड़ा रहने दे, जब निथर कर तेल साफ़ हो जाय तब उसे अलग करले, चंद हफ़्ते बाद यह तेल काम लायक़ हो जायगा।

Duck's foot (डक्स फ़ुट)—Podophyllin देखो।

Dyer's Oak (डायर्ज़ ओक)—Galls देखो।

Dye Stuffs [डाइ स्टफ]—रंगने के मसाले ; कपड़े रंगने के मसाले या रंगों को डाइ स्टाफ कहते हैं। रंग दो तरह के होते हैं:—

(१) एक तो वह जो बिना किसी ज़ामिन के कपड़ों पर आपही चढ़ जाते हैं ऐसे रंग को Substantive dyes [हक़ीक़ी या चोखा रंग] कहते हैं।

(२) दूसरे वह कि जिन के रंगने के लिए ज़ामिन या खटाई देनी पड़ती है तब वह रंग चढ़ता है, ऐसे रंगों को Adjective dyes [मार्फ़ती या ज़ामिनी रंग] कहते हैं। खनिज पदार्थ, उद्भिज पदार्थ और जीव जन्तु के अंश से रंग बनाये जाते हैं, लेकिन अब बनावटी रंग कोल-टार से बहुत ज्यादा बनने लगे हैं जो खास कर अनीलीन कलर्स (Aniline colours) कहलाते हैं। यह कोलटार वाले रंग रासायनिक क्रिया से तयार होते हैं।

उद्भिज पदार्थों के रंग (Dyestuffs from Vegetable Kingdoms.)

(१) फ़ुस्तिक [Fustic or Mora wood]
(२) बिलायती पतंग [Red Brazil wood]
(३) बक़म या पतंग [देशी] [Sappan, Bakam-wood or Samfen wood]
(४) बहुत उमदा रंग वाली बिलायती पतंग या बक़म लकड़ी [Cam wood]
(५) नील [Indigo]
(६) मजीठ [Madder]

(७) कुसुम [Safflower]
(८) रतन जोत [Alkanat root]
(९) लटकन के फूल [Annatto]
(१०) [Cudbear]
(११) [Archill]
(१२) [Yellow berries]
(१३) हील, रुब्बे रेवंद [Gamboge]
[१४] हल्दी [Turmeric]
[१५] दारू हलदी [Morinda Angustifolia]
[१६] कमीला [Mallotus Phillipinensis]
[१७] आल [Morinda Citrifolia]
[१८] असबर्ग [Delphinium Zalil]
[१९] कत्थ [Cutch]
[२०] रामपात [Rum, Assam Indigo Plant]
[२१] जाफ़रान् [Saffron]
[२२] खून खराबा [Dragon's blood]
[२३] काजल [Vegetable black]
[२४] टेसू [Butea frondosa]
[२५] तुन के फूल [Tun flowers]
[२६] हार सिंगार [Nyctanthis arbor-tristis]
[२७] नासपाल [Pomegranate rind]
[२८] आम [Mango rind]
[२९] अडूसा की पत्ती [Adhotosa vasica]
[३०] हड़ [Myrobolan]
[३१] माजूफल [Quercus infectoria] इत्यादि ।

खनिज पदार्थ के रंग (Dyestuffs from Mineral Kingdoms.)

[१] सेंदुर [Red Lead, Vermillion]
[२] गेरू [Ochre]
[३] हिरमजी मट्टी
[४] प्यूड़ी [Peori dye]
[५] ज़ंगार [Copper acetate]
[६] सफ़ेदा [Sugar of lead]
[७] लाजवर्दी रंग [Lapis lazuli, Ultramarine]
[८] शंजर्फ़ [Cinnabar]
[९] कसीस [Sulphate of iron]
[१०] हरताल [Orpiment]। इत्यादि

जीव जन्तू के रंग (Dyestuffs from Animal Kingdoms.)

[1] लाखी रंग [Lac dye]
[2] किर्मदाना [Cochineal]
[3] हड्डी का काजल [Animal black]। इत्यादि

Dynamite (डायनामाइट)—यह बड़ी भयंकर चीज़ है और पहाड़ को उड़ा देना इसके आगे कोई चीज़ नहीं है। नाइट्रोग्लिसरिन [Nitro-glycerine], किसिलगुहर [Kieselguhr] और एक क़िस्म की जलने वाली मट्टी (a Siliceous infusorial earth) से, जो जरमनी देश में पाई जाती है, तयार होता है। नाइट्रोग्लिसरिन का तयार करना बड़े जान जोखिम का काम है लेकिन नोबल (Nobel) साहब ने एक तरीक़ा निकाला हैं जिसमें उतना डर अब नहीं रहा। ग्लिसरिन को बूंद बूंद करके खूब तेज़ शोरे और गंधक के गर्म गर्म तेज़ाब में डालने से नाइट्रो-ग्लिसरिन तयार होता है। १ हिस्सा कीसलगुहर और ३ हिस्सा नाइट्रो-ग्लिसरिन मिलाकर गूंध लेते हैं फिर सुखाकर छान लेते है, यह तेलिया लाल रंग की बुकनी होती है।

इसका दूसरा नुसखा यह है कि ७१ भाग नाइट्रेट आफ़ पोटाश (Nitrate of potash), १८ भाग नाइट्रोग्लिसरीन और १० भाग पिसा हुआ कोयला, इन सब को मिलाकर इसका १ हिस्सा प्याराफ़िन उसमें और मिला दिया जाता है, यह काले रंग की बुकनी है।

बड़े बड़े पहाड़ों में गुफा या खान खोदने और चटान उड़ाने के काम में लाया जाता है। पानी में भी इसका असर कम नहीं होता। जो कुछ हो यह बड़ी ही भयानक चीज़ है। सिवाय खान वग़ैरा खोदने के कदापि इसका इस्तेमाल न करना चाहिए। इसका तयार करना संगीन जुर्म है और सख्त सज़ा होती है।

E.

Eagle Wood [ईग्ल उड]—अगरू, अगर, ऊद । इसकी लकड़ी कुछ ज़्यादा काम की नहीं होती मगर जिस भाग में अगर का अंश रहता है वह काम की है । इस की पहचान भी मुशकिल है, दस बारह पेड़ काटने पर एक पेड़ अगर-राल वाला निकलता है । अगर में ख़ुशबू होती है और 'अगर धूप' की बत्तियां और अगर का अतर भी बनता है। भोटान, हिमालया, आसाम, खासिया, इष्टर्न बंगाल वग़ैरा में यह पेड़ बहुत होता है । अगर भी कई तरह का होता है जैसे सिंगापुरी अगर या सिलहटी अगर या जंगली अगर वग़ैरा । सुगंधी और दवा के लिए इसकी मांग बहुत रहती है, न केवल हिन्दुस्तान में ही नहीं बलके योरोप में भी । इस पेड़ की दो क़िस्में हैं ।

[१] गगली (Aquilaria Agalloch).

[२] मवर्दी (A. Malaccensis) या टाइगर्ज़ मिल्क ट्री) (Tiger's Milk Tree).

इसकी लकड़ी को अंग्रेज़ी भाषा में एलो-उड (Aloe-wood), एलोज़ (Aloes). लिगनम् एलोज़ (Lignum Alloes), भी कहते हैं ।

इसके काले हिस्से में ही अगर, रहती है जिसे घुर्की कहते हैं और लगभग १६) या २०) सेर के भाव मिलती है । इस के हलके टुकड़े दम कहलाते हैं और घटिया होने के कारण २) या ३) सेर बिकते हैं । इस पेड़ की छाल भोजपत्र की तरह पुस्तकें लिखने के लिये आसाम देश में इस्तेमाल होती थीं ।

तगर नाम की लकड़ी मेडागारकर और ज़ंजीबार से आती है यह Holmes साहब का कथन है, लेकिन Dick साहब लिखते..हैं कि बंगाल में जो तगर मिलता है वह सिलहट के पहाड़ की एक लकड़ी है जो थिला, व तिलई के नाम से विख्यात है।

Earth Grass (अर्थ ग्रास)—भूस्तृण, रोहिश। यह सुगंधित घास है। काश्मीर, पंजाब के पहाड़, अलमोड़ा, गढ़वाल, नैपाल वग़ैरा में पैदा होता है। यह कई जाति की होती है। इसकी एक जाति रूसा घास भी है जिस से विख्यात सुगंधित तैल 'रूसा तैल' या नीमार तैल (Rusa Oil or Nimar Oil) निकाला जाता है और निमार तेल का बहुत व्यापार मध्य प्रदेश के मुक़ाम निमार, बेतूल, होशंगाबाद, मंडला व सेवनी में होता है। सूबा बेरार के मुक़ाम मुक्तागिरी, बम्बई प्रान्त के मुक़ामात तलोदा, पिम्पलनेर, शाहादा इत्यादि में तयार होता है। यह तेल गुलाब के अतर में बहुत मिलाया जाता है।

Earth Nut (अर्थ नट)— मूंगफली। Ground Nuts देखो।

Earhenware (अर्दनवेअर)— Pottery देखो।

East Indian Geranium (ईस्ट इंडियन जीरानियम्)—रूसा, रोसा, रौंस, गंधबेना, मिरचियागंध,, रोहिश। यह रूसा नाम की घास है इस का खुश्बूदार तेल निकाला जाता है और इस की बड़ी क़दर योरोप में है। गुलाब के अतर में बहुत मिलाया जाता है। यह छ क़िस्म की घास होती है। इसी के तेल से जेरानिओल (Geroniol) निकलता है। यह तेल बम्बई से योरोप बहुत जाता है। सन १९०६-७ में ३,१९,९४९) का गया। इस का व्यापार और भी बढ़ सकता है। Earth Grass भी देखो।

Eau-de-cologne (यू-डी-कोलोन)—यू डी कलोन। मशहूर विलायती खुशबू या अतर है। बहुत दिनों तक तयार करने की तरकीब गुप्त रही मगर अब यह जरमनी में और ग्रेट बृटन में भी बहुत बनता है। दोनों जगहों के बने माल का फ़र्क़ जानना बहुत बारीकी का काम है। यह नींबू, चकोतरा, नारंगी, नेरोली, बरगमट वग़ैरा के सुगंधित तेल को रेकटिफ़ाइड स्पिरिट में मिला कर तयार करते हैं। कभी कभी 'जिरानियम' (Geranium) का सत्त या तेल भी मिलाया जाता है। यह सब चीज़ें खूब घोली जाती हैं और फिर दो महीने

तक पड़ी रहने के बाद शीशियों म भर कर बाज़ार में बेची जाती है।

Ebonite (एबोनाइट)—एक खास क़िस्म से तयार किया हुवा गंधक मिला रबड़। खिलौना वग़ैरा के बनाने के काम आता है और नक़ली जेट (Jet) की जगह इस्तेमाल किया जाता है।

एबोनाइट और वलकेनाइट में फ़र्क़ यह है कि उनके रंग जुदा जुदा हैं और पहिला कुछ नर्म होता है और दूसरा ज़्यादा कड़ा। कम गंधक और कम आंच देने से रबड़ मुलायम और अधिक स्थितीस्थापक गुणवाली बनती है। १० या ५ भाग गंधक मिलाकर २७० से ९७५ डिगरी तक की आंच में नर्म रबड़ और ३० फी सदी गंधक मिलाकर ३१५ डिगरी की आंच देने से वलकेनाइट रबड़ (Vulcanite Rubber) तयार होता है, हाथीदांत की तरह यह ख़रादी जाती है। इस की छीलन फिर गलाकर एक कर ली जा सकती है और हाथी दांत के बुरादे की तरह बेकाम नहीं हो जाती। Rubber देखो।

Ebony (एबोनी)—आबनूस। यह निहायत सख्त, भारी और काले रंग की ख़ुशनुमा व क़ीमती लकड़ी होती है। हिन्दुस्तान में इस के चार पांच क़िस्म के पेड़ हैं, जैसेः—

(१) 'Diospyros Ebenum'—आबनूस, तेंदू, तेमरू, खेंड़ इत्यादि—यह दक्खिन और करनाटक में पाया जाता है मगर सिलोन में बहुत होता है और यही सब से अच्छा आबनूस है। यह योरोप में बहुत भेजा जाता है।

(२) 'D. Embryopteris'—गाब', मकूर-केंडी, तिंदुकी, तिम्बोरी इस की केवल गोंद काम आती है और गूदा जिल्द-बंदी व नावों के जोड़ बंद करने में इस्तेमाल होता है। इस के अधकच्चे फल कूट कर ६ या ७ दिन पानी में भिगा कर रखे जाते हैं। जो अर्क़ निकल आता है उस से भूरा रंग रंगते हैं। हड़ और हीरा कसीस मिलाने से खूब काला रंग हो जाता है। इस रंग से जाल बहुत रंगी जाती है जो पानी में बहुत दिनों तक नहीं सड़ती गलती।

(३) D. Kurzi—(इसे Marble wood भी कहते हैं — थिटिकिया बर्म्हा में और पेचादा अंडमन टापू में कहते हैं। गेम्बल साहेब लिखते हैं कि यह बहुत अच्छी लकड़ी है और अगर काफ़ी चलान हो तो योरोप में खूब बिके।

(४) D. Melanxylon—तेन्दु, केन्दू, तेमरू, आबनूस। नगीने में इसी लकड़ी की आबनूस की चीज़ें बनाई जाती हैं। यह मध्य प्रदेश और छोटा नागपुर के जंगलों में बहुत होता है। इस के फल ग़रीब लोग खाते हैं।

(५) D. Montana--बनगाब, तेम्बरनी, गोइन्दू, मकरटेंडी। यह छोटा पेड़ होता है और इस की लकड़ी छोटी चीज़ों के बनाने के काम आती हैं। यह हिन्दुस्तान में बहुत जगहों में होता है। इस के फल बिष टेंडू या कुंदर कहाते हैं और पानी में डाल देने से मछलियां मर जाती हैं।

(६) D. Lotus—अमलुक, मलूक। यह हज़ारा, काश्मीर, अफ़ग़ानिस्तान में होता है। इस की गोंद पानी में डाल देने से पानी जम जाता या गाढ़ा हो जाता है। इस के फल पकने पर बहुत खाये जाते हैं और पेशावर में बहुत बिकने आते हैं।

आबनूस के पेड़के मुसले के बीच की लकड़ी काली निकलती है और बहुत कड़ी होती है। महिनों तक लकड़ी पानी में भीगी रहती है जिससे वह और भी ज्यादा सख्त हो जाती है। इस लकड़ी की क़ीमती आरायशी व ठाठ की चीज़ें बनाई जाती हैं जैसे चौखटे, छड़ियां, क़लमदान वग़ैरा।

नुसख़ा आबनूसी रौग़न—(१) सिर्के में चंद पुराने लोहे के टुकड़े जिन पर खूब मोर्चा लगा हो तर करके उस सिर्के के साथ माजूफल उबाले इस काढ़े को लकड़ी पर लगाकर सुखावे और पालिश करले।

(२)—कसीस और लाग उड के काढ़े में माजूफल पिसा हुआ मिलाकर लकड़ी पर खूब मले और सूखने पर तेल का पुचारा दे दे इसके बाद फ्रेंच पालिश में नील मिलाकर लगावे।

(३)—२$\frac{3}{4}$ औंस माजूफल और २ सेर लागउड के टुकड़ों को लगभग १ सेर स्वच्छ जल के साथ ताम्बे के बरतन में १ घंटे तक उबाले। इसे कपड़छान करके गरम गरम ही लकड़ी पर कई लेप चढ़ावे। इस से सुन्दर काला रंग चढ़ जायगा।

(४)—५ सेर पानी में $\frac{1}{2}$ सेर लागउड के बारीक टुकड़े, १ पाव कसीस, १ पाव लागउड का काढ़ा, १ पाव नील और २ औंस काजल मिलाकर लोहे के बरतन में धीमी आंच पर उबाले। उतार कर छान ले। इस में $\frac{1}{4}$ औंस माजूफल की बुकनी घोल दे। सस्ते काम के लिये यह अच्छा काला रंग है।

Edge Tools (एज टूल्ज़)—कारीगरों के औज़ार, धारदार औज़ार। यह भी हर क़िस्म के विदेश से आकर यहां बिकते हैं। इस देश में भी बहुत बनाये जाते हैं तो भी बाहर से बहुत आते हैं। सन १९०७-८ में १९,५३,१५१) के, सन १९०८-९ में १९,९७,७५०) के, सन १९०९-१० में १९,८५,१५८) के आए।

Eggs (एग्ज़)—अंडे, बैज़े। पक्षी के अंडे ज्यादा खाए जाते हैं। हिन्दुस्तान में भी कबूतर, हंस, मुर्गी, पीरू वग़ैरा के अंडों की खपत कम नहीं है। अब तो कई जगह पोलटरी फ़ार्म (Poultry farm) क़ायम होने लगे हैं। यह रोज़गार भी फ़ायदे का है। अंडे के अंदर जो सफ़ेद रंग का लसदार द्रव पदार्थ रहता है उसे अलबूमेन (Albumen) कहते हैं, जो फ़ोटोग्राफ़ी और छींट छापने में बहुत काम आता है।

Elemi (इलेमी)—एक क़िस्म का खुशबूदार राल या गुगुल। यह राल शहद की तरह गाढ़ी और स्वच्छ निकलती है जो मिलावट करने पर पीले रंग की हो जाती है। इससे मलहम, सीमेंट, रौग़न, वारनिश वग़ैरा बनती हैं, अतर या खुशबू की चीज़ों में भी मिलाई जाती है। यह राल वेस्ट इंडीज़ से आती है। देखने में 'कोपल' (Copal) राल की तरह की होती है।

Emerald [एमेरेल्ड]—पन्ना। यह सबज़ा की जाति का उत्तम हरे रंग का क़ीमती रत्न है। सबसे उमदा पन्ना कोलम्बिया और वेनेज़ूला

(Columbia and Venezuella) देश से आता है और घटिया क़िस्म तो योरोप के कई मुक़ामों में पाया जाता है। पन्ना जब खान से निकलता है तब इतना मुलायम होता है कि सहज में पीस लिया जा सकता है, मगर कुछ दिनों तक खुला पड़ा रहने पर वह सख्त हो जाता है। Emerald Copper—पन्ने का ताम्बा या पन्ने की धूल एक तरह का हरे रंग का खनिज पदार्थ है जो बहुत कम मिलता है, उसे डायपटोज़ (Dioptos) भी कहते हैं और यूरल पहाड़ में प्रायः पाया जाता है।

Emerald Green (एमेरल्ड ग्रीन)—यह हरा रंग है और बड़ी ज़हरीली चीज़ है। यह ज़ंगार और संखिया के तेज़ाब (Arsenious Acid) के योग से तयार होता है। इसे बाज़ार ही से गीला खरीद लेना अच्छा है, बुकनी हवा में उड़ने न पावे इस का ख्याल ज़रूर रहे।

Emery [एमरी]—कोरंड, कोरन, समद। जब खालिस कोरंड में लोहे वगै़रा का मेल रहता है तब इस को एमरी कहते हैं। इस के कण निहायतही सख्त होते हैं। इस लिए जवाहरात, कड़े कांच, कड़े पत्थर वगै़रा के काटने रगड़ने या पालिश करने के काम में बहुत लाया जाता है। सान् पर भी इस की महीन बुकनी चढ़ी रहती है। हकाक लोगों के बड़े काम की चीज़ यह है। कोरंड मैसूर, मद्रास, आसाम, हैदराबाद, पंजाब वगै़रा कई जगहों में पाया जाता है। युनाइटेड स्टेट में नक़ली कोरंड [Carborundum] बहुत तयार किया जाने लगा है और नीलगिरि (हिन्दुस्तान) में भी बाक्साइट [Bauxite] से नक़ली कोरंड बनाया जाता है। ज़िला कोयम्बटूर (मद्रास) में एक मट्टी Nepheline-Syenite नाम की मिलती है उस में कोरंड बहुत रहता है, योरोप में चलान करने से बहुत कुछ फ़ायदे की उमेद है।

Emery Paper [एमरी पेपर]—एमरी पेपर, स्यांड पेपर। कार्ड—बोर्ड बनाने के लिये जो कागज़ की लगदी या गीला गूदा होता है उस

में एमरी याने मानिक रेत मिलाकर और शिकंजे में दबा कर काग़ज़ के टुकड़े बना लेते हैं। यह पालिश करने के काम में बहुत आता है।

Emery Wheel (एमरी व्हील)—सान्। उबाले हुए अलसी के तेल में उमदा मानिक रेत ख़ूब मिला कर कड़ी आंच में गरम करते हैं, कड़ा हो जाने पर हाइड्रालिक प्रेस में दबाकर ठप्पे के मुताबिक सान तयार कर लेते हैं और भट्ठे की आंच में सुखा लेते हैं।

सफ़ेद रेत (बालू), कांच का बारीक़ चूरा, लाख और मानिक रेत मिला कर तयार होता है।

Enamelled Ware (इनामेल्ड वेअर)—रौग़नी बरतन के एनामलं बरतन। यह सन् १९०८-९ में ५·१४ लाख रु० का और सन् १९०९-१० में १२·८६ लाख रुपए का हिन्दुस्तान में आया। पीतल और ताम्बे का भाव चढ़ जाने से यह धातु कम मंगाए जाते हैं अतः एनामल के बरतन ज्यादा आने लगे हैं। यह कारोबार फ़ायदे का है मगर हिन्दुस्तान में अभी इसके कारख़ाने नहीं क़ायम हुये। बग़ैर सीखे यह काम अच्छा नहीं होगा इस लिये इस के नुसखे लिखना फ़ज़ूल है क्योंकि इस में आंच का अन्दाज़ा कठिन है।

Ermine (अर्मिन, अर्माइन)—काकुम। न्यूले या चिखुरी की तरह का एक गोश्तख़ोर जानवर होता है जो १० इंच लाम्बा होता है और उस की पूंछ ३ या ४ इंच लांबी होती है। गरमी में इस के रोएं ज़र्दी मायल हो जाते हैं और जाड़े में सफ़ेद। सफ़ेद रोएं के चमड़े का गुलूबंद वग़ैरा अमीरों का बनता है। इस की बहुत क़दर होती है। हिन्दुस्तान में भी यह बहुत पाया जाता है। इसे Soat भी कहते हैं।

नुसखा—इसे साफ़ करना हो तो प्लास्टर आफ़ पेरिस की गर्म गर्म बुकनी छिड़क कर ब्रश से खूब रगड़े, फिर झटकार कर कंघी कर दे (तर कंघी से और (तब होशियारी के साथ लोहा कर दे याने गर्म लोहा उस पर फेर दे बीच में गीला कपड़ा रख कर।

Esparto (स्पार्टो)—इस्पार्टो । एक क़िस्म की घास है जो मेडीटरेनियन सी (समुद्र) के तट पर होती है । इस से चटाइयां, पिटारे वग़ैरा बनते हैं । मगर काग़ज़ बनाने के लिए इसकी बड़ी मांग रहती है। लाखों टन इसकी अलजीयर से विलायत जाती है । अभी यह हिन्दुस्तान में नहीं मंगाई जाती है । सिर्फ़ ग्रेट बृटन में ही सन् १९०५ में ५०८ टन और १९०६ में १.८६,३४२ टन गई थीं । इसी से इस घास की मांग और भी समझ लीजिये । इसे अलफ़ा (Alfa) भी कहते हैं ।

Essential Oils (इसेंशल आयल)—Oil देखो ।

Ether (ईथर)—ईथर । एक रासायनिक द्रव पदार्थ । एक बोतल के अलम्बीक (Retort) में अलकोहल डालकर उतनाही गंधक का तेज़ाब उस में मिला देते हैं, दोनों मिलकर खूब गर्म हो जाते हैं और जब नीचे से आंच बढ़ाई जाती है तब उस में से ईथर और साथ में कुछ अंश अलकोहल का दूसरे बोतल में चला जाता है । इस में अलकोहल और देकर कशीद करने से ईथर बनता है ।

इसकी महक मीठी होती है और स्वाद में जलन पैदा करनेवाली चीज़ है और यह बहुत तेज़ बलने लगता है ।

हवा से इसकी भांप मिलकर भभक जाने वाली गेस बन जाती है। अगर खुला रक्खा जाय तो बहुत जल्द उड़ जाता है और इतनी जल्दी उड़ता है कि वहां बड़ा शीत पैदा हो जाती है । इसीलिए बरफ़ जमाने में काम आता है। इस पदार्थ में चरबी, राल वग़ैरा झट से घुल जाते हैं । रासायनिक क्रियाओं में इस से बड़े बड़े काम निकाले जाते हैं खास करके किसी पदार्थ का तेल वग़ैरा अलग कर लेने के लिये यह बड़ी अच्छी चीज़ है । सूंघने पर थोड़ी बेहोशी पैदा करती है. इसलिए क्लोरोफ़ार्म की जगह भी काम में लाया जाता है और इससे किसी तरह की हानि का डर नहीं रहता। यह जरमनी में तयार होता है ।

Eucolyptus (यूकोलिपटस)—एक क़िस्म का पेड़ है जो आस्ट्रेलिया में

ज्यादा होता है। इसका दूध या राल खुश्बूदार होती है। इसका तेल भी निकलता है जो साबुन बनाने में काम आता है और कई तरह की सुगंधित चीज़ें भी इससे बनती हैं। इसमें कपूर की सी सुगंधी होती है।

Extract of meat (एक्सट्राक्ट आफ़ मीट)—शोर्बा, माउललेहम। मांस या गोश्त का सत्त। मांस का लाभकारी और पुष्टकर तत्व निकाल कर इसका बड़ा व्यापार होता है। खूब क़ीमा किए हुए गोश्त को पानी में इतना उबालते या सिझाते हैं कि गोश्त का आठवां भाग पानी में घुल जाता है, तब उस शोरबे को कुछ गाढ़ा करके बंद शीशियों में जिसमें कहीं से भी हवा न जा सके बंद करके बिक्री के लिए देश देशान्तर चलान करते हैं।

F.

Faience (फायंस)—मट्टि के उमदा रोग़नी बरतन।

Fan (फ्यान)—पंखे, पंखियां। हवा देने के लिए जो चीज़ काम में लाई जाती है उसे पंखा कहते हैं। इस देश में बड़े फ़र्राशी पंखे लकड़ी के बनाए जाते हैं जिनमें झालर लगी होती है और छतों में लटकाये जाते हैं. और हाथों से खींचकर झले जाते हैं। कलों के काम में हवा देने के वास्ते धात की चरखियां बनाई जाती हैं जो स्टीम या बिजली से चलती या घूमती रहती हैं और चरखी के घूमने से हवा झोंक से निकलती है। दस्ती पंखियां किसी हलकी चीज़ों से ऐसी बनाई जाती हैं कि जिन्हें हाथ में लेकर इधर उधर डोलाने से हवा लगती है। चीन और जापान में तरह तरह के दस्ती पंखे बनाने का कारोबार बहुत होता है। उमदा खूबसूरत पंखे हाथी दांत, चिड़ियों के पंख या पर, रेशमी कपड़े, काग़ज़, कछुए के कचकड़े, ताड़, बांस, सींख, और दूसरी क़ीमती चीज़ों के बनते हैं। सालाना चलान २०,००,०००) की है। उमदा (Fan) याने खुलने व बन्द होनेवाली पंखियां पेरिस में बहुत बनाई जाती हैं जहां इसके खासकर भारी कारखाने हैं। हमारे देश में मामूली दस्ती पंखे बांस की चपटी तीलियों, ताड़ के पत्ते और खजूर के पत्तियों से बनाए जाते हैं और उमदा पंखियां चन्दन, हाथीदांत, हड्डी, मोर के पंख, काग़ज़, अबरक, कपड़े इत्यादी से तरह तरह के बनाए जाते हैं, तो भी लाखों रुपये साल की दस्ती पंखियां बाहर से आती हैं।

Farina (फेरीना)—फ़िरनी। मैदे की तरह की चीज़ को 'फ़िरनी' कहते हैं। मगर व्यापार सम्बन्ध में आलू की माड़ी को ही फेरीना कहते हैं। अरारूट, मक्खन वग़ैरा कई चीज़ों में मिलावट के लिये यह काम आती है। खास तरकीब से इसकी एक चीज़ बनती है जिसे फ्रेंच सागो (French sago) कहते हैं और छींट छापने का मसाला गाढ़ा करने के काम आता है।

Fats (फ्याट)—चरबी, मेदा, चिकनाई । चरबी [याने चिकनाई] जानवरों और कुछ बनस्पतियों में होती है । हर क़िस्म के जानवर की बिलासाफ़ की हुई चरबी को 'टालो' (Tallow) और सुअर की चरबी को 'लार्ड' (Lard) कहते हैं । बनस्पती की चिकनाई को 'तेल' कहते हैं । नारियल, बिनौला, और कई प्रकार के बीज से तेल निकाला जाता है । यह सब बहुत काम आता है और चंद बनस्पती की चिकनाई और साफ़ चर्बी खाई भी जाती हैं । उनसे साबुन बनते हैं, मोमबत्तियां तयार होती हैं, इंजनों में चिकनाहट देने के बहुत काम आती हैं ।

Feathers (फ़ेदर्स)—चिड़ियों के पर, पंख । कई क़िस्म की चिड़ियों के पर गद्दे व तकिये भरने, कलग़ियां बनाने, पंखियां और अनेक प्रकार की चीज़ें सजाने के काम आते हैं । ३०,००,००० रूपए के 'पर' ग्रेटबृटन में हर साल दुसरे देशों से जाया करते हैं । हिन्दुस्तान से 'पर' पेश्तर बहुत जाते थे परंतु अब कम जाते हैं । सन १८८०-८१ में २,६९,४४७) रूपये के पर चलान हुए थे, सन १८८४-५ में ६,३३,०१७) के गए । सन १८९५-६ में ५,५५,१८५) का, सन १९०५-६ में ४,४१६) का और १९०६-७ में १,४३७) का गया । हिन्दुस्तान से जिन चिड़ियों के पर चलान होते हैं उनके नाम यह हैं । (१) बगुला, खोंचबगला, (२) नरी, अंजन (३) सुर्खियां बगला (४) कौड़ियाला किलकिल (५) किलकिल, मचरंगा (६) छोटा किलकिल (७) गुरियाल, बदामी (८) नीलकंठ (९) होब्रार, तिलुर (१०) छोटा तिलुर, (११) छोटा चरट, चरस, बरसाती, चीनी मोर, (१२) मलंग बगला (१२) किलचिया (१३) पतोख़ बगला (१४) मोनाल (१५) मोर (१६) लूंगी (१७) सोहन (१८) जंगली मुर्ग़ी (१९) हड़गिला या गड्डड़ (२०) टुइयां तोता (२१) मदना (२२) तोता (२३) पनडुब्बी (२४) बोदल या जेवार (२५) हुदहुद वग़ैरा ।

इन सब के पर या चमड़े बहुत ज़्यादा हर साल इस देश से रवाना हुआ करते थे पर अब ऐसा क़ानून जारी हो गया है कि इनकी चलान बन्द हो जायगी ।

योरप के अमीरों के तकियों में शुतुर मुर्ग़ के मुलायम पर प्रायः भरे जाते हैं।

Felt (फ़ेल्ट)—नमदा, जमाया हुआ ऊनी कपड़ा। ऊन की जो चीज़ बिनी हुई न हो बल्कि जमाई हुई हो उसे नमदा या फ़ेल्ट कहते हैं। ऊन और चंद क़िस्म के बाल या रोएं में यह गुण होता है कि वे आपुस में उलझ और चिपट जाते हैं। उनको नम करके दबाने और मसलने से वह खूब मज़बूत चिपक और गुथ जाते हैं यही तरकीब इस के बनाने की है। नमदे के फ़र्श, जूते, टोपियां और अनेक भांति के वस्त्र बनते हैं। मोटे नमदे में पिच या अलकतरा मिला कर मकान की छत पाटते हैं।

इस देश में बिछाने के काम का 'नमदा' बहुत बनता है पर उमदा फेल्ट योरोप में तयार होता है।

नमदा बनाने की तरकीब जो संयुक्त प्रान्त में बरती जाती है वह आम तौर से यह है कि धुने हुये ऊन को चटाई पर समान रूप से फैला देते हैं। घटिया या बढ़िया नमदे के अनुसार ऊन की तह पतली या मोटी होती है। उस पर पानी के छींटे देकर चटाई को लपेट लेते हैं और होशियारी के साथ हाथों पैरों से कुचलते या दबाते हैं। कई घंटे यही काम होता रहता है और फिर उसी तरह जमाते हैं। इस के बाद खोल कर उस पर ऊन की दूसरी तह फैलाते हैं। बहुत उमदा ऊन तो सिर्फ़ पानी की छींटा और दबाने से ही नमदा बन जाता है। मामूली ऊन के नमदे में नीम के तेल का साबुन या रीठे का पानी, खली, गोबर, मैदा या टेसू के बीज का आटा मिलाना पड़ता है।

ज़िला बहराइच में सादे और रंगीन बेल बूटेदार उमदा उमदा नमदे वहां के मुसलमान जुलाहे तयार करते हैं। सादे नमदे लगभग ॥) या ॥=) सेर और रंगीन लगभग १॥) सेर के हिसाब से बिकते हैं। बाज़ बाज़ नमदे निहायत खुशनुमा और तरहदार होते हैं। घोड़े की जीन के नमदे, बारानी, गरदनी इत्यादि आगे बहुत तयार

किये जाते थे मगर सस्ती चमड़े की ज़ीन की वजह से इस रोज़गार को बहुत नुक़सान पहुंचा है। नमदे के फ़र्श, आसनी, जाय-नमाज़ वग़ैरा अब भी बनते हैं।

सूबा बम्बई में भी कई जगह नमदे तयार किये जाते हैं जो खास कर के घोड़ों की ज़ीन के नीचे कसे जाते हैं। सिंध देश में तल, गुजरात में डली और अन्य स्थानों में ज़ीन या बनेस कहाते हैं। बारानी को गुजरात में घुमटी या मोचला कहते हैं और बरसात में पानी से बचने के लिये ग़रीब लोग ओढ़ते हैं। यहां उर्द का आटा या करंज के बीज से (तेल निकाल लेने पर) नमदा जमाते हैं।

Fennel (फ़ेनेल)—सौंफ़, बड़ी सौंफ़, मौरी, बादियान। यह हिन्दुस्तान में भी बोई जाती है। इसके दाने में एक अच्छी सुगन्धी होती है। इस में से एक क़िस्म का उड़जाने वाला तेल निकलता है। इसे अंग्रेज़ी में अनिथोल या एनिस क्यांफर (Anethol or Anise Camphor) कहते हैं। सौंफ़ के अर्क़ (अर्क़ बादीयां) में इसी तेल की ख़ुशबू रहती है। इस की जड़ दस्तावर और पत्तियां पेशाब लाने वाली दवा है। सौंफ़ की चलान विदेशों में ख़ासी है, खास कर के सिलोन में बहुत भेजी जाती है और ग्रेट बृटन व जर्मनी में भी जाती है। इस की सालाना रवानगी का औसत १ लाख रुपए से ऊपर का है। सन् १९०३-४ में १५,०८५ हंड० क़ीमती १,१६,३७०) की और १९०६-७ में १०,९७४ हंड० मालियती १,०२,७३५) की गई थी।

Fennel, Small (स्माल फ़ेनेल)—कालाज़ीरा, मुगरेला। इसे ब्लाक क्यूमिन (Black Cumin) भी कहते हैं।

Fibre (फ़ाइबर)—रेशा, सूत्र, बाल, सूता। घास या पेड़ के रेशे या सूत जिन से रस्से, रस्सियां, तागे, तार, कपड़े वग़ैरा बनाये जा सकें, उनको फ़ाइबर (Fibre) कहते हैं, जैसे सन्, मूंज, कपास, पटुआ, जूट वग़ैरा। जानवरों के बाल, रेशम, ऊन, भी फ़ाइबर कहाते हैं; इन सब का बहुत बड़ा व्यापार दुनिया भर में होता है।

हिन्दुस्तान में आम तौर से नीचे लिखे रेशे काम में लाये जाते हैं।

(१) बगर या भब्बर (२) छूजन (३) दाब, कुश (४) बन्नी (५) दिहला (६) कई (७) मूंज (८) पचई (९) पटक (१०) सिल (११) अलसी (१२) भंग (१३) स्वेत बर्वा (१४) खिप (१५) आक (१६) कारल (१७) सन (१८) पटसान (१९) पलास (२०) धामन (२१) गोन्दनी (२२) कल्यार (२३) मज़री (२४) खजूर (२५) बेंत इत्यादि और भी अनेक रशेदार चीज़ें हैं।

मशहूर रेशेदार पेड़ों में जूट (पटसन), हाथीचिंघार, रांमबांस (Sisal Hemp); मनीला हेम्प (Manilla Hemp), रमई [Rhea or China grass], सन् [Sunn Hemp], अम्बारी [Decan Hemp] इत्यादि हैं।

Fig (फ़िग)—अंजीर। यह ताज़ी और सुखा कर खाई जाती है। इसको सिमिरना फ़िग (Smyrna Fig) भी कहते हैं।

कई जाति की अंजीर हिंन्दुस्तान के कई भाग में खास कर बिलोचिस्तान व काश्मीर में बहुत होती है यह दवा में भी काम आती है। पूना की तरफ़ खास कर खेड़शिवापुर की अंजीर मशहूर है जो कि बम्बंई में खाई जाती है।

Fig. India-Rubber (इंडिया रबर फ़िग)—बोर, अद्यबोर, लेस। यह पेड़ हिमालय में नेपाल से पूरब आसाम तक, खासिया पहाड़ और बर्म्हा में बहुत होता है और इस के दूध से रबर बनती है। इस का व्यापार भी बहुत होता है। इंडियन कौचुक ट्री (Indian Cautchouc Tree) भी कहैाता है।

Fir (फ़र)—सरो, या झाड़ के जाति के पेड़ जिन की पत्तियां सदा हरी और बारीक होती हैं, इन पेड़ों से राल, रजन, तारपीन, बिरोज़ा, बिलसान इत्यादि निकलते हैं। कनाडा में एक क़िस्म का झाड़ होता है जिस की राल को केनाडा बालसम (Canada Balsam) याने कनाडा का बिलसान कहते हैं।

Fire Clay (फ़ायर क्ले)—आतशी मिट्टी। उस मिट्टी को कहते हैं जो कड़ी से कड़ी आंच में टिघल या गल न जाय। इस मिट्टी की घरिया, ईंटे इत्यादि बनती हैं। जहां कोयले की खान होती है वहीं यह ज़्यदा पाई जाती हैं। यह बेलजियम, जरमनी, फ्रांस, स्वीडन और यूनाइटेड स्टेट और ग्रेट बृटन में बहुत निकाली जाती है। खास कर के 'स्टोरब्रिज क्ले' (Stourbridge Clay) की बहुत मांग रहती है। हिंदुस्तान में भी कई जगह मिलती है और जबलपुर, जोआई (आसाम), चांदा, उमरिया और गोंडवाना की खानों के पास से निकलती है। अब तक इस मट्टी की क़दर हिन्दुस्तान में न थी और न उससे फ़ायदा उठाया जाता था। कलकत्ते के Burn & Co. ने आतशी मिट्टी की ईंट बनाने का कारोबार खोल दिया है। इस मिट्टी में बालू व अलमिना का अंश अधिक रहता है। Brick देखो।

Fire lute (फ़ायर लूट)—बनावटी आतशी मिट्टी। २ हिस्सा उमदा मिट्टी, ८ भाग साफ़ धोआ हुआ बालू व १ भाग घोड़े की लीद इन को मिला कर गारा की तरह सान कर मिट्टी या ईंटं इत्यादि बना ले। यह ५०० डिगरी तक की आंच सह सकती है।

Fishes (फ़िशेज़)—मछलियां। इसका बहुत बड़ा व्यापार तमाम दुनिया में होता है। हिन्दुस्तान में भी मछलियां बहुत खाई जाती हैं। हिन्दुस्तान के समुद्र में बहुत ही ज़्यादा मछलियां मिलती हैं पर इन का उतना व्यापार नहीं होता कि जितना चाहिए, हालांकि विदेशों से लाखों रुपए की मछलियां इस देश में बिकने को आया करती हैं। इस व्यापार में बहुत बड़ी गुंजाइश है और बहुत तरक्की की जा सकती है। हिन्दुस्तान की मशहूर खाने क़ाबिल मछलियां हिलसा, बेगति, सीर, नेहरे या सबहरी, हरुआन या सेन्नाल, माहसीर, सरना, चालह, दुरही, सींगी, करसा, रोहू, बुंच या गुंच, उलबी, बिढ़ाली, हंकुस वग़ैरा हैं। मछलियों के पंख, छिलके और तेल बहुत काम आते हैं और इन का अच्छा व्यापार है। लाखों मन मछलियां धुंआसी हुई या मसाले से लपेटी हुई वा सुखा कर दूर दूर जाकर बिका करती हैं।

मछली के तेल से नर्म साबुन बनता है, वह बालने के काम आता है और दूसरे तेलों में उसका मेल भी दिया जाता है।

विदेशों से हर साल २५ या ३० लाख रुपये से ज़्यादा की मछलियां यहां आया करती हैं।

Flagstone (फ़्लगस्टोन)—एक क़िस्म का बलुआ पत्थर जिस की सिल्लीयां पाटन वा गच बनाने के काम में आती हैं। यह पत्थर नर्म होता है और चट्टानों से बड़े बड़े लम्बे चौड़े तख़्तों की शकल में निकलता है। संयुक्त प्रदेश में यह पत्थर इमारत के काम में बहुत आता है और प्रायः बिन्ध्याचल पहाड़ से निकलता है।

Flannel (फ़्लोनेल)—फ़लालैन। यह ऊन का बिना हुआ एक क़िस्म का कपड़ा होता है। सब से अच्छी वेल्ज़ (Wales) के भेड़ की फ़लालैन होती है। लंका शीयर की बनी हुई फ़लालैन दूसरे दर्जे की और यार्कशीयर की तीसरे दर्जे की होती है। वेल्ज़ की फ़लालैन न्यू टाउन (New Town), वेल्स्पूल (Walespool) और लेंगोलेन (Llangollen) में बिनी जाती है। रंगीन बारीक फ़लालैन फ्रांस में बनती हैं।

Flavine (फ़्लावेन)—एक क़िस्म का ज़र्द रंग (Vegetable Colour नबाताती रंग) है और यह एक क़िस्म के 'ओक' (Oak) पेड़ की छाल से निकाला जाता है। युनाइटेड स्टेट से यह आता है। लेकिन अनीलीन कलर के आगे इस का इस्तेमाल भी कम हो गया है।

Flax (फ़्लाक्स)—क्षुमा, अलसी, तीसी, अलसी वा सन, पटुआ, मसीना (बंगला)। इस के रेशे से 'लिनन' (Linen) नामक कपड़ा बनता है। अलसी की खेती सब से ज़्यादा रूस में होती है। हिन्दुस्तान में भी यह बहुत बोई जाती है। इस की दो आम क़िस्में हैं एक सफ़ेद दाने की और दूसरी लाल दाने की तीसी कहाती है। इन दोनों क़िस्मों के फूल भी लाल व आसमानी दो रंग के होते हैं। सफ़ेद तीसी में तेल ज़्यादा रहता है।

सन् १९०६-७ में ३०,२८,२०० एकड़ में अकेली अलसी और ६,३३,००० एकड़ में मिलवां बोए जाने का तखमीना हुवा था। बंगाल में इस की सब से ज़्यादा खेती है, इस के बाद मध्यप्रदेश और फिर संयुक्त प्रान्त का नम्बर है, इन के बाद बम्बई, सिन्ध, पंजाब, हैदराबाद, मध्यप्रदेश, राजपूताना, मद्रास, आसाम और बर्म्हा हैं।

इस की चलान विदेशों में बहुत ज़्यादा होती है।

सन् १९०५-६ में ५७,८८,८६० हंडरवेट अलसी क़ीमती ४,११,५५,३९८) की गई थी। हिन्दुस्तान के अंदर भी इस की चलान केवल रेल्वे द्वारा ५० हज़ार हंडरवेट से ज़्यादा ही की होती रहती है।

रेशे निकालने की तरकीब यह है कि जब अलसी में बीज पड़ जाय तब बीज काट कर पौधे काट लिए जाते हैं और उनके गट्ठे पानी में सड़ाए जाते हैं। तब रेशों को कूट कूट कर उस में के चिपके हुए गूदे छुड़ा लिये जाते हैं और रेशों को धो कर सुखा लेते हैं। इन रेशों की 'कंघी' (Scutching) की जाती है, जिस से वे सुलझ जाते हैं और जो कुछ गूदा वग़ैरा लगा रह जाता है, वह भी छूट जाता है। तब इन रेशों से सूत बनाकर लिनेन (Linen) नामक बारीक रेशों से एक क़िस्म की ऊमदा लैस बनती है जो 'ब्रशल लैस' (Brussel Lace) कहलाती है।

इस के बीज से तेल निकाला जाता है और तेल निकलने पर जो खुद बच रहता है वह तीसी या अलसी की खली कहाती है। उबलते हुए पानी में अलसी का तेल मिलाया जाता है तो एक क़िस्म का तेल निकलता है जो केरोन आयल (Carron Oil) कहलाता है और जले हुए अंग और फफोलों पर लगाने से फ़ायदा होता है।

Flax Seed Oil (फ्लाक्स सीड आयल)—अलसी का तेल या तीसी का तेल। यह तेल रौग़न, वारनिश वा आयल, पेंटिंग (Oil Painting) में बहुत काम आता है। इस देश में बालने और रौग़न बनाने के लिए इस्तेमाल किया जाता है।

इस तेल की बहुत ज़्यादा क़दर विलायत में इस वजह से की जाती है कि वह जल्द सूख जाता है, इस लिए रंग रौग़न इस से

बहुत बनता है। मगर हिन्दुस्तान के तेली इस में सरसों का तेल मिला कर इस की बेक़दरी कर देते हैं।

तीसी का तेल निकालने की एक मशहूर मिल कलकत्ते के पास 'गौरीपुर मिल' नाम की है। इस मिल का तेल और खली सारे हिन्दुस्तान में जाकर कुछ न कुछ बिकता है। इस का तेल ३ लाख और ४ लाख रुपए तक का हर साल विदेशों में जाता है, खास कर के आस्ट्रिया और न्यूज़ीलेंड में यह तेल कलकत्ते से ज़्यादा जाता है। तीसी की खली गाय बैल को खिलाई जाती है।

सन् १९०९-१० में बृटिश इंडिया में कुल ३० आयल मिलें थीं मगर इन में से तीसी का तेल निकालने का ज़्यादा काम किस में होता है (गौरीपुर मिल छोड़ कर) यह नहीं कहा जा सकता। मिलों की तायदाद हर साल घटती बढ़ती रहती है।

Flint Glass (फ्लिन्ट ग्लास)—Glass देखो।

Flacks (फ्लाक्स)—ऊन का गूदड़, गूदड़। ऊन का खुद, परों की कतरन, पुरानी रूई के पहल या गूदड़ या इसी प्रकार की सस्ती चीज़ें जिन से गद्दे वग़ैरा भरे जाते हैं, उनको अंगरेज़ी में फ्लाक कहते हैं।

Floor Cloth (फ्लोर क्लाथ)—दरी, टाट, कालीन, फ़र्श। फ़र्श पर बिछाने की चीज़ों को 'फ्लोर क्लाथ' कहते हैं।

आजकल 'आयल क्लाथ', जो कनवस पर वार्निश करने से तयार किया जाता है और कार्क का चूर मिलाकर भी बनाया जाता है, फ़र्श पर बिछाने के काम आता है।

Flour (फ्लोर)—आटा, मैदा, पिसान। पीसे हुए गल्ले को खास कर पीसी और छानी हुई गेहू को आटा कहते हैं। और आटा छानने पर जो मोटे खुद या छिलके गेहूं के बच जाते हैं उसे चोकर कहते हैं। खूब बारीक आटे को मैदा कहते हैं और मैदा छानने पर जो दरदार आटा निकलता है वह सूजी कहाता है। गेहूं का आटा, सूजी व मैदा मनुष्य की बहुत अच्छी खुराक है और बहुत खाया जाता है, इसकी रोटी चपाती, बिस्कुट वग़ैरा बनती हैं। मैदा से लेई, कलफ़ वग़ैरा

भी तयार होता है मगर गेहूं का मैदा महंगा पड़ता है इस लिये चावल का मैदा इस काम में ज़्यादा आता है और कई दूसरे गल्लों के मैदे से भी कलफ़ या मांड़ी तयार करते हैं, जो हुनर के कई काम में इस्तेमाल होता है। यह ५९ लाख रुपए का विदेशों को जाता है।

सन् १९०९-१० में ५९३८ लाख का आंटा चलान हुआ था। इंगलंड में आटा कनाडा, यूनाइटेड स्टेट, जर्मनी और आस्ट्रिया से भी जाता है।

Flowers, Artificial (आर्टीफ़िशल फ्लावर्ज़)—बनावटी फूल, मसनूई फूल, कपड़े या काग़ज के फूल। फ्रांस में यह कारोबार दुनियां भर में सब से ज्यादा होता है। हर साल लग भग १,५०,००,०००) का बनावटी फूल वहां से चलान हुआ करता है। मोम के बने फूलों का कारोबार इससे अलग है और यह इंग्लिस्तान में ज्यादा होता है।

Fluor spar (फ्लोर स्पार)—यह एक क़िस्म का पत्थर है। यह पत्थर खूब सख्त, तुनुक-भंज (तड़क जाने वाला) और स्वच्छ [पारदर्शक] होता है। आम तौर से इसका रंग सब्ज़, नीला, बैंजनी और ज़र्द होता है, इसके और भी कई रंग होते हैं। इसके फूलदान इत्यादि बनते हैं। धात निकालने के लिए बड़े काम और क़दर का मसाला इससे तयार होता है। गंधक के तेज़ाब के साथ गर्म करने से हाइड्रो-फ्लोरिक एसिड (hydro-fluoric acid) बनता है। यह एसिड (तेज़ाब) कांच को खा जाता है, इसलिए कांच पर फूल वग़ैरा बनाने में इस्तेमाल होता है। रासायन क्रिया में इसका बहुत काम पड़ता है।

Fluxes (फ्लक्सेज़)—यह वह मसाला है जिसके मिला देने से कड़ी धातें जल्द गल जाती हैं, जैसे सोहागा, क्रीम आफ़ टारटार, शोरा, नौसादर, नमक, चूना, कांच, फ्लोर स्पार इत्यादि।

Fox skin (फ़ाक्स स्किन)—लोमड़ी की रोएंदार खाल। इसकी बहुत तिज़ारत योरोप में होती है। उमदा खाल की क़ीमत १५०) रुपये तक होती है। रूस इंगलंड, युनाइटेड स्टेट व साइबीरिया इत्यादि में बड़ा कारोबार होता है।

Frankincense (फ्रांकिंसेन्स)—कुन्दुर, लुबान । इसका पेड़ अफ़रिका और अरब में होता है । इसकी राल नर्म, चमचिबड़ और ज़र्द रंग की होती है और जलाने पर इसमें से मनोहर सुगंधी निकलती है । लुबान कई क़िस्म की गिनी जाती है जैसे कुन्दुर ज़कर (यह सबसे उमदा क़िस्म है), कुन्दुरउन्सा, कुन्दुरमधराज (पेड़ की राल लेकर हाथ से दाने बना लिये जाते हैं), कशफ़ा या किशार कुन्दुर (जो बम्बई में धूप के नाम से बिकती है) और दुकाक कुंदर (लुबान की धूल) । यह चीज़ हिन्दुस्तान में बहुत आती है लेकिन उमदा क़िस्म की लुबान याने कुन्दुर ज़कर छांटकर योरोप रवाना कर दी जाती है और धूल वग़ैरा घटिया मेल इस देश और चीन के लिये रख ली जाती है । यह हर साल ३ या ४ लाख रूपए के लगभग की आती है और फिर यहां से दूसरे देशों में चलान होती रहती है । इसे अलीबेनम् (Olibanum) भी कहते हैं ।

हिन्दुस्तान में भी इसकी जाति का एक पेड़ होता है जिसे कुन्दुर, सलई, गुग्गुल, धूप (Indian Olibanum Tree or Boswella Serrata) कहते हैं यह भी दो प्रकार का पेड़ होता है । इसकी राल को सलई-गुगुल कहते हैं और पंजाब में बहुत निकाली जाती है और दवा में काम आती है ।

French berries (फ्रेंच बेरिज़)—Yellow berries देखो ।

French chalk (फ्रेंच चॉक)—संग जहारत । Steatite देखो ।

French polish (फ्रेंच पालिश)—फ्रेंच बारनिश । स्पिरिटवार्निश (Spirit Varnish) भी कहाती है ।

नुसखा—१ पाइंट स्पिरिट, $\frac{1}{8}$ औंस कोपाल (gum copal), $\frac{1}{8}$ औंस गोंद कीकर, १ औंस उमदा स्वछ लाख (Shellac) । सूखे मसालों को कूट पीसकर मलमल के कपड़े में छान ले । स्पिरिट और मसाले बोतल में मिलाकर, मुंह अच्छी तरह काग से बंद करके गर्म गर्म अंगीटी में या उसके पास रक्खे, बीच बीच में हिलाता

जाय। दो तीन दिन में मसाला घुल जाता है। फिर मलमल में छानकर नए बोतल में बंद करके रखले।

(२) ६ औंस उमदा लाख, १ क्वार्ट नफ़था, $\frac{3}{4}$ औंस बेनज़ोइन और १ औंस संदरूस।

(३) ज़र्द लाख उमदा २$\frac{1}{8}$ रतल, मसतगी व संदरूस तीन तीन औंस, स्पिरिट १ गेलन। इन सबको घोलकर कोपाल बारनिश १ पैंट खूब मिला ले।

(४) १२ औंस लाह व १ क्वार्ट उड नफ़था घोलकर इसमें $\frac{1}{2}$ पैंट अलसी का तेल मिला ले।

फ्रेंच पालिश करने की रीति यह है कि ऊनी कपड़े का टुकड़ा लेकर और उसकी तह लगाकर ऐसा गोला सरीखा बना ले कि उंगलियों से धरा जा सके, इस गद्दी की चिकनी पीठ पालिश में लगावे फिर इसे एक मलमल या लंकलाट के कपड़े में लपेट कर उस पर एक बूंद पालिश का और एक बूंद खालिस तिल्ली के तेल की लगाकर जिस पर पालिश करना हो उस पर गोलाई की तरह घुमा कर हाथ फेरे और इसी तरह सारे लगादे, जब लकड़ी बखूबी पीले तब छोड़ दे। खूब सूख जाने पर बारीक स्यांड पेपर रगड़े और दूसरी बार फिर पालिश लगावे। अगर ज़रूरत समझे तो तीसरी बार भी चढ़ावे। आख़ीर में लम्बे हाथ से पूचारा देता हुआ सुखा दे। दोबारा पालिश दो तीन दिन बाद पहिली पालिश खूब सूख जाने पर चढ़ना चाहिए। अच्छी पालिश करने के लिया मंजा हुआ हाथ चाहिये।

Fuchsene (फुसीन)—यह एक क़िस्म का अनलीन रंग है। इससे रेशम और ऊन लाल रंग के रंगे जाते हैं।

Fucus (फ़ूकस)—समुद्रीय सेवार, समुद्र की सेवार,। इसकी राख से खार याने सोडा बनता है और 'आयोडीन्' (Iodine) नाम की दवा भी इन्हीं सेवारों से तयार होती है।

Fuller's earth (फुलर्ज़ अर्थ)—मुलतानी मिट्टी, सज्जी मिट्टी, खारी मट्टी। इस

मट्टी में खार या सोडा नहीं होता है गो यह गलती से सज्जी मट्टी कहलाती है असल में यह हाइड्रस सिलिकेट आफ़ एलम (Hydrous Silicate of alum) है। पंजाब में यह खोदकर बहुत निकाला जाता है। ऊनी कपड़े धोने के काम आता है इससे तेल व चिकनाहट ऊनी कपड़े की दूर हो जाती है।

Fulminates (फ़लमिनेट)—पटाखे का मसाला। बारूद की तरह भक से उड़ जाने वाले मसाले को फ़लमिनेट कहते हैं। यह कई क़िस्म के धातु के नाइट्रेट और शोरे के तेज़ाब के संयोग मे अलकोहल मिलाने से बनता है। लेकिन खास क़िस्म का मसाला पारे और चांदी से बनाया जाता है। शोरे के तेज़ाब और अलकोहल में पारे को गरम करने से पारा गल जाता है और यह मसाला तयार होता है। यह सफ़ेद रंग की दानेदार बुकनी या क़लमें होती हैं और पानी में घुल जाती हैं।

गीला मसाला छूने में इतना डर नहीं रहता मगर सूखा मसाला ज़रा सी चोट या दाब पड़ने से भभक या जल उठता है। इस का तयार करना जोखिम का काम है। चांदी से भी यह मसाला इसी तरकीब से बनाया जाता है और इस में शोरा गंधक मिलाकर बंदूक़ की टोपियां बनाई जाती हैं।

Fur (फ़र)—फ़र, पोस्तीन। जानवर के उस खाल को कहते हैं जिस पर छोटे, मुलायम व चिकने रूंए या रोएं हों, हिन्दुस्तानी ज़बान में इस को पोस्तीन कहते हैं। चूंकि गर्म वस्तु पर ढाक देने से उस की गर्मी नहीं निकलती इस लिए सर्दी से बचाने के लिए कपड़े की तरह यह पहनी जाती है।

नुसखा फ़र साफ़ करने का :—गरम बालू और आटा फ़र के प्रत्येक भाग पर खूब छिड़क दो फिर कड़े ब्रश से रगड़ो। इसके बाद छड़ी से फटकार लो और पानी से तर कंघी से कंघी कर दो और तब ज़रा होशियारी के साथ गर्म लोहे से दबा दो या लोहा कर दो।

Furniture Oil (फ़रनीचर आयल)—लकड़ी की बनी चीज़ों पर चढ़ाने का रौग़न—यह रौग़न कई तरकीबों से बनाया जाता है।

नुसखा—(१) १० छिटांक अलसी के तेल को उबाल कर उस में ४ औंस ज़र्द मोम गला लो और अलकनेट की जड़ (Alkanet root) का रंग दे दो।

(२) दो ड्राम एसेटिक एसिड, आधा ड्राम लेवेन्डर का तेल, एक ड्राम रेक्टीफ़ाइड स्पिरिट और चार औंस अलसी का तेल मिला लो।

(३) १० छिटांक अलसी का तेल, २ औंस अलकनेट की जड़ गरम करके छान लो, तब इस में लाख-वारनिश मिला लो।

Furniture Polish (फ़रनीचर पॉलिश)—अखरोट बराबर के ३ या ४ दाने संद्रस को १० छिटांक उबाले हुए तेल में डाल कर १ घंटा तक उबाले। जब ठंडा होने लगे तब १ ड्राम वेनीस टारपीन मिलावे। अगर मसाला गाढ़ा हो तो थोड़ा सा तारपीन का तेल मिलाकर ढीला कर ले। फ़रनीचर पर लगा कर चन्द घंटे बाद पोंछ ले। रोज़ इस से मलते रहने से फ़रनीचर चमकता रहेगा और कीड़े न लगेंगे और २ या ३ महीने बाद यह वारनिश चढ़ा देने से फ़रनीचर नया बना रहता है।

Fusible metal (फ्यूज़िबुल मेटल)—थोड़ी सी आंच में झट पिघल जाने वाली मिलवां धातु। यह बिस्मथ, सीसा और रांगा मिलाकर बनती है। इस में कभी कभी 'क्याड्मियम्' (Cadmium) नाम का धातु भी मिला दिया जाता है। जितनी आंच में पानी उबलता है उस से भी कम आंच में यह चीज़ गल जाती है। ठप्पा लेने, स्टीरियो टाइप वग़ैरा बनाने में काम आता है।

नुसखा—(१) ८ भाग बिस्मथ, ५ भाग सीसा, ३ भाग रांगा इन को गलाकर मिला लो (आंच बहुत तेज़ न लगे)

(२) २ भाग बिस्मथ, ५ भाग सीसा, ३ भाग रांगा (यह उबलते हुए पानी में गलने लगता है)।

(३) ५ भाग बिस्मथ, ३ भाग सीसा, २ भाग रांगा (यह १९७ डिगरी की आंच या गर्म भाप में भी गलने लगता है स्टीरियो करने (Stereotyping) में काम आता है ।

Fused oil (फ़्यूज़्ड आयल)—इसे 'पोटाटो स्पिरिट' (Potato Spirit) भी कहते हैं । अलकोहल कशीद करने में एक क़िस्म का अर्क़ ऐसा निकलता है जो ज़्यादा नहीं उड़ता उसी का यह नाम है । यह पानी की तरह का बे रंग एक अर्क़ है जिसमें तेज़ महक रहती है और ज़बान पर लगाने से जलन पैदा होती है । इस में 'प्रॉपिलिक्, ब्यूटिलिक् हेग्ज़िलिक्' (Propylic, Butylic or Hexylic) अलकोहल रहता है मगर खास तौर से प्रोपिलिक् अलकोहल (Propylic Alcohol) तो रहता ही है । यह इसंशल आयल या वारनिश बनाने के काम आता है ।

Fustian (फुस्टियन)—एक क़िस्म का मोटी ज़ीन बिनावट का कपड़ा यह मेंचेस्टर में ज़्यादा बनता है । मर्दानी पौशाक बनाने के काम आता है ।

Fustic (फुस्टिक)—फ़ुस्तिक । एक क़िस्म के पेड़ की लकड़ी है जिसमें से पीला रंग निकलता है । यह (Morus tinctoria) नामक पेड़ की लकड़ी है । इसे 'ओल्ड फ़ुस्टिक' (Old Fustic) भी कहते हैं। इस का बहुत इस्तेमाल होता है । इस की एक क़िस्म और होती है जिसे 'ज़्याण्टी, यंग फुस्टिक' (Zante or Young Fustic) कहते हैं। यह (Rhus Colinus, Elm-leaved Sumach) याने अलकोव, चनियाट, आमी, लरगा इत्यादि नामक पेड़ की लकड़ी है, जो हिमालय पहाड़ में कुमाऊं से पश्चिम के पहाड़ों तक में पाई जाती है ।

G.

Gallam Butter (ग्यालम बटर)—च्यूरा-के-पीना, फलेल या फुकवा। 'फुलवाड़' या 'च्यूरा' 'च्यूली' (Bassia Butyracea) नाम का एक पेड़ गंगा किनारे से भोटान तक हिमालय पहाड़ में होता है। यह मानों हिन्दुस्तान का 'बटर ट्री' (Indian Butter Tree) है। इस में से गाढ़ा दूध निकलता है। गठिया में इसका लेप लगाया जाता है या होंटों पर मलने से होंट नहीं फटते। इस पेड़ के बीज से तेल भी निकलता है जो बालने या साबून बनाने के काम आता है।

Galangal (ग्यालंगल)—कुलंजन। यह एक क़िस्म के पेड़ की जड़ है। यह पेड़ दो क़िस्म के होते हैं (१) बड़ा कुलंजन (२) छोटा कुलंजन या पान की जड़। इसी का मुरब्बा चीन से आता है और अद्रक का मुरब्बा के नाम से बिकता है। यह दोनों दवा के काम आते हैं। संयुक्त प्रान्त में छीपी लोग छींट छापने में भी इस्तेमाल करते हैं। इसका व्यापार चीन और हिन्दुस्तान के बीच में बहुत होता है। बड़े व छोटे कुलंजन में फ़र्क़ बहुत ही कम होता है। छोटा कुलंजन लगभग १० या १२ हज़ार रुपये का हिन्दुस्तान से बाहर जाता है।

Galbanum (गलबेनम्)—बिरोज़ा, गंदाबिरोज़ा, बज़ेंद। यह पेड़ खास करके शीराज़ और किरमान में होता है, इसकी गोंद बंबई में बहुत आती है जहां से इजिप्ट और टरकी को जाती है। यह गोंद तीन क़िस्म की होती है [१] 'लीवंट गम' (Levant gum) जिसे खसनिब कहते हैं शीराज़ से आती है, [२] गन्दाबिरोज़ा (Persian gum resin) कहाती है इसमें तारपीन की सी बू रहती है और [३] गावशीर या गावशीर (Persian liquid) यह सब्ज रंग की गीली चीज़ है। यह दवा के काम आती है। डाक्टरी में इसका गुण हींग का सा माना जाता है। इसके खाने से गठिया के दर्द में आराम

मालूम होता है और अंग पर सूजन हो जाय और जल्दी न बैठती हो तो पलास्तर की तरह इसे लगाते हैं।

Galena (गलीना)—इसे लेड ग्लान्स (Lead glance) भी कहते हैं। यह एक खनिज पदार्थ है जिस में सीसा और गंधक मिला रहता है, प्रायः जस्ता, चांदी ताम्बा, लोहा, और सुरमे का मेल भी रहता है। यह एक भूरे रंग का भारी पदार्थ है जिसमें धातु की सी चमक दमक रहती है और यह संगखारा (granite) बलुए पत्थर और चूने वाले पत्थर की तहों या जोड़ों में पाया जाता है। सीसा इसी पदार्थ से निकाला जाता है। यह पदार्थ योरोप और यूनाइटेड स्टेट में अधिक पाया जाता है।

Gallic acid (ग्यालिक एसिड)—यह एक क़िस्म का एसिड है जो माज़ूफल, सुमोक (Sumach = तत्रक, तुंग या चनियार), दिविदिवि (Divi divi) इत्यादि पेड़ों के बीज से निकलता है। आम तौर से माज़ूफल ही से अधिक निकाला जाता है। माज़ूफल को पानी में भिगाकर कई सप्ताह तक उसका खमीर उठाते हैं (थोड़ी गंधक का तेज़ाब मिला देने से खमीर जल्द तयार होता है) इस एसिड की क़लमें पतली, स्वच्छ, रेशमी चमक की और खट्टी बन जाती है। यह हवा लगने से काली पड़ जाती है। कपड़े पर निशान देने की सियाही (Markіng Ink) बनाने के काम में बहुत आता है और दवा की तौर पर भी इस्तेमाल होता है।

फोटोग्राफ़ी में जो पाइरोगालिक आसिड इस्तेमाल होता है वह भी इसी जाति की चीज़ है और प्रायः मिलाने से ही तयार की जाती है।

Galls (गॉल्ज़)—माज़ू, माज़ूफल। इस का पेड़ एशिया माइनर, सीरिया वग़ैरा की तरफ़ होता है और वहीं से माज़ूफल हिन्दुस्तान में आता है। इसे 'डायर्ज़ ओक' या 'ओक एप्ल' (Dayer's Oak or Oak-Apple) भी कहते हैं। सब से उमदा क़िस्म का माज़ू 'अलीपू' (Aleppo) से आता है। इस पेड़ पर एक जाति के कीड़े पत्तों की तह में अंडे देते हैं जिस से पत्तों पर खुरंड वा गांठ जम जाती

है यही माजू है। इसका कसाव चमड़ा पकाने या रोशनाई बनाने या दवा के काम आता हैं और उस से ग्यालिक एसिड (Gallic Acid) और टेनिक एसिड (Tannic Acid) बनते हैं। यह काला रंग रंगने के काम में भी लाया जाता है। इसे मांईफल भी कहते हैं।

Galvanised Iron (गळवनाइज्ड आयर्न)—जस्ता चढ़ा लोहा या चादर। लोहे पर हवा और पानी के असर से बहुत जल्द ज़ंग (मोरचा) लग जाता है इस के बचाव के लिए लोहे की चद्दरों पर जस्ता चढ़ा देने से ज़ंग नहीं लगता। लोहे की चद्दरों को खूब साफ़ करके टिघले हुए जस्त में ग़ोता देते हैं। जस्त की पतली तह उस पर चढ़ जाती है। इन चद्दरों के सायबान, मकान की 'टीन की छात' वगैरा बनाई जाती हैं और बाल्टियां, पीपे, तार और जहाज़ के कुलाबे या कील कांटे बनाए जाते हैं और नल भी बनते हैं। इन चद्दरों को लहरिया बना कर मोरीदार बना लेते हैं तो उसे Corrugated Iron याने मोरीदार चादर, या लोहे की खपरैल कहते हैं।

सन् १९०९-१० में यह १,२४,३७७ टन आया था।

Gambier (गंम्बीर)—गंभीरी। नामक पेड़ की पत्तियों का गाढ़ा काढ़ा बना कर उस में से लासे की तरह की एक चीज़ निकाली जाती है, जिसकी चक्कियां या टिकियां बना कर और सुखा कर बेची जाती हैं। यह रंगने या चमड़ा पकाने अथवा दवा में इस्तेमाल होती है। ख़ास कर के सिंगापुर से बहुत चलान होती है।

Gamboge (ग्यम्बोज)—औसार रेवन, रेवन चीनी, घौटा घौबा, रेवा चीनी शीरा, रूबेरेवन। यह एक क़िस्म की गोंद या राल है जो पांच जाति के पेड़ से निकलती है।

(१) पहिली जाति का पेड़ अरसिन गुर्गी, अरदल, कनकुटकी वग़ैरा (Garcina Morella or Indian Gamboge Tree) कहाता है और खासिया के पहाड़, इष्टर्न बंगाल, वेस्टकोस्ट और सीलोन में होता है।

(२) दूसरे जाति के पेड़ का नाम हिल, मन्थुलि, अरदल वग़ैरा (G. Gambogia) है इसकी राल बड़ी चेपदार होती है पर पानी

में नहीं घुलती इसलिये कम काम आती है अलबत्ता तारपीन में मिलाकर पीली वारनिश बनाई जाती है। यह पेड़ सिलोन और वेस्ट कोस्ट में होता है। उसका फल खट्टा होता है और खाया जाता है।

(३) तीसरी जाति का पेड़ तमाल, टेपोर, मन्होला वग़ैरा (G. Xanthochymus) कहलाता है इस में से घटिया राल निकलती है यह मुसब्बरी में पीला रंग रंगने के काम में बहुत आती है। आसाम में और लखीमपुर में इससे चटकीला पीला रंग रंगा जाता है। भीमरत्ती (Symplocos Grandiflora) की पत्तियों का ज़ामिन देने से यह रंग अच्छा चढ़ता है।

(४) चौथी क़िस्म इस की आराकान की तरफ़ होती है जिसे वहां वाले थनथ्री (G. Heterandra or Arakan Gamboge) कहते हैं। इस में से भी राल निकलती है।

(५) पांचवीं क़िस्म का पेड़ बंगाल में 'कौआ और बर्म्हा में तौंथली (G. Cowa) कहाता है। इसके राल से पीला पका रंग निकलता है जिस से बौध मत के सन्यासी अपना भगवा रंगते हैं। इस के फल का अचार तयार किया जाता है।

यह ज़र्द रंग की तुर्श व तलख़ गोंद होती है और सब से अच्छी सायाम देश से आती है। पेड़ में पच्छना लगाने से ज़र्द रंग का गाढ़ा रस निकल कर सूख जाता है। दवा में भी यह बहुत काम आती है और बहुत तेज़ दस्तावर दवा है। पीतल के बरतन को रंगने, काठ की चीज़ों पर वारनिश के साथ पीला रंग चढ़ाने के काम आती है।

Garacine (ग्यारासाइन)—एक क़िस्म की रंग की बुकनी। मजीठ की जड़ व गंधक या नमक के तेज़ाब और पानी के संयोग से तयार होती है। मजीठ को उक्त तेज़ाब मिले पानी में उबालते हैं फिर उसे धोकर और पीसकर बुकनी कर लेते हैं। पहिले उसका इस्तेमाल छींट छापने में बहुत था मगर 'अनीलीन कलर' के आगे इसका रंग भी फीका पड़ गया है जैसा कि और प्राचीन रंगों की हालत हुई।

Garnet (गारनेट)—याकूत, चुनरी, मेहताब, तामड़ा ? । यह एक क़िस्म का जवाहिर है और कई रंग व आभा का पाया जाता है मगर ज्यादातर धुंधला लाल रंग का होता है और बोहेमिया, सिलोन, ब्राज़िल और पेगू से आता है । पेगू का नग सबसे अच्छा होता है। सूबा मद्रास में विज़गापटम, गोदावरी, त्रिचनोपाली वग़ैरा में और सर्वर (रियासत किशनगढ़) और राजमहल (जैपुर) व बम्हों वग़ैरा में भी मिलता है। हिन्दुस्तान में इसकी बहुत चलन है और राजपूताना का नग उमदा गिना जाता है । जयपुर और किशनगढ़ की रियासतों में अब भी यह निकाला जाता है । हकाक लोग इसके नग तराश कर ज़ेवर में बहुत जड़ते हैं । जयपुर की खान से जो नग निकलते हैं उसे अंगरेज़ी में 'ओरियंटल गार्नेट' (Oriental garnet) या 'आमिथिस्टाइन' (Amethystine) कहते हैं ।

तखमीना है कि साल में ३०,०००) और १,५०,०००) के बीच की मालियत के यह नग हिन्दुस्तानी खानों से निकाले जाते हैं ।

Gasolene (ग्यासोलीन)—साफ़ किये हुए पेट्रोलियम को भभके द्वारा कशीद करके 'गेसोलीन' निकाला जाता है । यह तेल बहुत जल्द उड़ जाता है । यह गेस अंजन या हवागाड़ी में जलाने के काम आता है।

Gauze (गौज़)—जाली, कपड़धूर, गॉज़, गाच । एक तरह का बारीक कपड़ा जिसके सूत दूर दूर बिने होते हैं । मैदा छानने या पहिनने या मसहरी बनाने के काम आता है । पहिले यह रेश्मी बनता था पर अब सूति सस्ता बनने लगा है ।

Gedge's Metal (गेजेज़ मेटल)—Brass देखो ।

Gelatine (जीलेटिन)—जीलेटिन । यह एक क़िस्म का निहायत उमदा और साफ़ किया हुआ सरेस है । जानवरों के मुलायम खाल, गोश्त, हड्डी, खुर व सींग से यह तयार किया जाता है । इसके बनाने की तरकीब अब आला दरजे की मालूम हो गई है जिससे सहल में और उमदा चीज़ तयार हो सकती हैं । जिलेटिन फ़ोटोग्राफ़ी वग़ैरा और कई हुनर के काम में इस्तेमाल होती है । निहायत उमदा और साफ़

की हुई जिलेटिन् खायी भी जाती है और दवा की गोलियां भी इससे बनाई जाती हैं। इसे 'आइसिन्ग्लास' (Isinglass) भी कहते हैं। मगर 'आइसिनग्लास' अधिक स्वच्छ होता है।

असल जीलेटीन तो 'स्टर्जियन' (Sturgeon) नामक मछली के सांस की नली से बनती है मगर अन्य मछलियों की अंतड़ियों और मेदे को भी ठंडे पानी में भिगाकर और धीमे धीमे उबाल कर 'जीलेटीन' आम तौर से तयार करते हैं। जानवरों की हड्डी, मांस व नस इत्यादि में से भी खूब तेज़ गर्म पानी या तेज़ाब के ज़ोर से निकालते हैं। आइसिनग्लास ठंडे पानी में फूल कर नर्म हो जाता है और गर्म पानी में घुल जाता है।

German Silver (जर्मन सिल्वर)—जरमन सिलवर। कई धातु के मेल से चांदी की तरह की एक सफ़ेद चमकीली और सख्त धात बनायी जाती है। इसमें ताम्बा, निक्ल और जस्ते का मेल है, इन धातों की मिक़दार में कमोबेशी कर के कई क़िस्म का ज़रमन सिलवर बनता है। दो क़िस्म के जर्मन सिलवर ढालने के काम के बनते हैं।

(१) एक क़िस्म के जर्मन सिल्वर में निक्ल और जस्ता समभाग मिला कर उतना ही ताम्बा मिलाया जाता है।

(२) दूसरी क़िस्म में ताम्बा ६२½ भाग, निक्ल १२½ भाग और जस्ता २५ भाग दिया जाता है। पिटवां काम या चद्दर के लिए ताम्बा ५७·१ भाग, निक्ल २३·९ भाग और जस्ता १९ भाग मिलाकर जरमन सिलवर बनता है।

यह धात बहुत कड़ी होती है और जल्दी घिसती नहीं, बरंच बहुत दिनों तक चलती है। ताम्बे के क़लईदार बरतनों की जगह इस के बरतन काम में लाए जाते हैं। अब मालूम हुआ है कि इस की बारीक तार बिनी भी जा सकती है। इस के बने बरतन में खटाई या खारी चीज़ न रखना चाहिए।

जरमन सिलवर की कई नक़ल दूसरे धातुओं से बनाई जाने लगी हैं जिन के नाम 'सिलवरायड' (Silveroid), 'आरजंटॉयड' (Argentoid), 'नीवोलीन' (Nevoline) और 'निकेलीन' (Nickeline) कहते हैं।

ऐसा सुना जाता है कि अल्लूमीनियम पर क़लई चढ़ाने की तरकीब निकाली गई है, अगर यह खबर सच है तो जर्मन-सिलवर के व्यापार के जल्द टूट जाने की सम्भावना है।

जर्मन-सिलवर तयार करने के नुसखे :—

(क) ५० भाग ताम्बा, २० भाग निक्ल, ३० भाग जस्ता। यह पीटा जा सकता है और इस पर खूब चमक आती है।

(ख) ५० भाग ताम्बा, २६ भाग निकल, २४ भाग जस्ता। यह लगभग चांदी का सा हो जाता है।

(ग) ६० भाग ताम्बा, २५ भाग निक्ल, २० भाग जस्ता। इस की तार तक बन सकती है।

(घ) ५५ भाग ताम्बा, २४ भाग निक्ल, १६ भाग जस्ता, ३ भाग रांगा, २ भाग लोहा।

जरमन-सिलवर १८'०८ लाख रुपए का सन् १९०९-१० में आया।

Ghee (घी)—घी। भैंस इत्यादि के दूध से मक्खन और इस मक्खन को पिघला कर पानी का भाग अलग कर के घी बनता है।

हिन्दुस्तान में तो यह खास खुराक है और बहुत खाया जाता है। कम से कम ३ लाख टन या ८२ लाख मन का हर साल केवल हिन्दुस्तान ही में खप जाता है।

Gherkins (घेरकिन)—Cucumber देखो।

Gin (जिन)—जिन। एक क़िस्म की जौ या अनाज से कशीद की हुई शराब। इसमें जुनीपर का मेल दिया रहता है।

Ginger (जिंजर)—अदरक, सोंठ। यह एक पौधे की जड़ वा कन्द है जो गर्म मुलकों में होता है। इसकी बहुत ज्यादा काश्त अमेरिका और

अफ़रिका में की जाती है। अच्छी जातिका अदरक जमैका से आता है। अदरक को जब चूने में तर रखकर गंधक का धूआं देकर सुखा लेते हैं तब वह सोंठ कहाता है। सोंठ बनाने का तरीक़ा यही है। पूना, अलप्पे, ट्रावंकोर और वेस्टर्न कोस्ट व मलाबार में सोंठ बनाने का कारोबार खूब होता है। बंद कोठरी में गंधक का धूआं भरा जाता है जहां अद्रक के टोकरे रक्खे रहते हैं। ६ घंटे से १२ घंटे तक वह धूयें में रहते हैं फिर निकालने पर धूप में सुखाये जाते हैं और फिर गंधक का धूआं खिलाया जाता है।

अदरक दो तरह का देखने में आता है (१) 'काले रंग का' यह धूप में सुखाया हुआ होता है और (२) दूसरा 'सफ़ेद रंग का' इसे भट्टों की गरमी से सुखाते हैं। अदरक में एक क़िस्म की लसदार गोंद और मांड़ी के अलावा चिकनाहट भी रहती है। इसी तेल की तलखी अद्रक में रहती है।

अद्रक का मुरब्बा, अचार और 'शरबत' (Syrup of ginger) जिससे जिंजर वाटर, जिंजर वाइन, जिंजर बीयर वग़ैरा तयार किए जाते हैं और जिंजर ब्रेड वग़ैरा कइ चीज़ें बनती हैं।

हिन्दुस्तान में भी अदरक बोआ जाता है। इसकी काश्त के लिये अच्छी ज़मीन दरकार होती है और इसके बोने में किसान को खासी तरदुद व देख भाल करनी पड़ती है। लाखों रूपए का अद्रक हर साल चलान होता है और चीन व जापान से लाखों का आता भी है। यह दवा के बहुत काम आता है, खासकर सोंठ ज्यादा फ़ायदे-मंद है। गर्म मसाले में भी खाया जाता है। सन १९०९-१० में १६·१२ लाख रुपए का हिन्दुस्तान से गया।

Ginger grass Oil (जिंजर ग्रास आयल) रूसा या अरूसा का तेल। इस घास को रूसा, रौंस, रोहिश वग़ैरा कहते हैं और गंधबेना, मिर्चियागंध, मकोर, पत्री भी कहते हैं। इसके तेल निकालने का कारोबार निमार में ज्यादा होता है इस लिए इसे निमार का तेल या निवाड़ी भी कहते हैं। यह घास तीन जाति की होती है। ताज़ी नइ उगी हुई घास को मोतिया कहते हैं और पुरानी घास जब पककर लाल हो जाती है

तब साफ़िया कहलाती है। इसका खुदबूदार रौग़न भभके से खींचते हैं। जब घास में फूल आता है तब उन्हें काटकर भभके में भर देते हैं और ऊपर से पानी छोड़कर उबालते हैं। भभके के नली से तेल निकल आता है। बाज़ार में ख़ालिस तेल बहुत कम मिलता है, गंधी लोग तिल्ली का तेल प्रायः मिलाकर बेचते हैं। 'अरूसे का रौग़न' गुलाब के इत्र की ज़मीन देने में मिलया जाता है। यह रौग़न बम्बई से लाखों रुपये का बाहर जाता है, सन् १९०६-७ में ३१९९४९) का भेजा गया था। 'मलाबार ग्रास' (Malabar grass) भी देखो।

Gingham (गिंघम्)—एक क़िस्म का सूती हलका रंगीन कपड़ा। पहिले यह हिन्दुस्तान ही में बिना जाता था मगर योरोप में अब ज्यादा बनता है। यह कपड़ा रंगे हुए सूत से बिना जाता है। इसी क़िस्म के दूसरे कपड़े ज़ेफ़िर (Zephyrs) और 'शम्ब्रे' (Chambreys) कहलाते हैं।

Ginseng (जिन्सेंग्)-हिन्दू, चीनी और जापानी इसे अमृत तुल्य दवा समझते हैं। इसमें सन्देह नहीं कि यह बड़ी पुष्ट औषध है और दुनिया भर में सब रोगों पर चलने वाली गिनी जाती है इसे अमृत कहना अत्युक्ति भी नहीं है। इसका व्यापार कोरिया और चीन में बहुत होता है।

Girasol (जिरासोल)—एक क़िस्म का क़ीमती पत्थर जिसमें पीले और लाल रंग की झलक मारती है, यह ओपल के क़िस्म का पत्थर या नग ब्राज़ील, मेक्सिको, हंगेरी और साइबीरिया में मिलता है। कांच में आक्साइड आफ़ टिन् याने बंग का भस्म मिलाकर नक़ली नग भी बनाया जाता है।

Girder (गर्डर)—गर्डर, लोहे की शहतीर। गर्डर ढलवां व पिटवां लोहे और फ़ौलाद के बनाये जाते हैं। इमारत के काम में ढलुवां शहतीर इस्तेमाल की जाती हैं और पिटवां लोहे की पुल इत्यादि बनाने के

काम में आती हैं। अब हिन्दुस्तान में भी इमारतों में 'गर्डर की शहतीरें' लगाई जाने लगी हैं।

लोहे की शहतीरें बिलायत से बहुत आती हैं, सन १९०९-१० में ६२०४६ टन आईं। बेलजियम में भी अच्छी शहतीरें बनती हैं।

Glass (ग्लास)—कांच, शीशा। बालू और खारी मिट्टी आग में गलाने से एक स्वच्छ पदार्थ बनता है। ग्लास कई क़िस्म के बनते हैं, जो भिन्न भिन्न काम में लाए जाते हैं।

(१) फ़्लिंट ग्लास (Flint glass) इसे कृस्टल ग्लास (Crystal glass) भी कहते हैं, जो पोटाश, सिलिका (बालू) और सफ़ेदा या मुर्दासंग (Oxide of lead) के संयोग से बनता है।

नुसखा—३०० भाग उमदा सफ़ेद बालू, २०० भाग मुर्दासंग या सेंदुर, ८० भाग साफ़ किया हुआ पर्ल ऐश (सीप की राख), २० भाग शोरा और थोड़ा सा संखिया और मेंगनीज (सेंढ़)।

(२) मामूली शीशे की टट्टी (Window glass) इसी क़िस्म में क्राउन ग्लास (Crown), शीट ग्लास (Sheet) और प्लेट ग्लास (Plate glass) शामिल हैं—यह सोडा, सिलिका (बालू) और चूने के संयोग से बनता है।

नुसखा—(क) १०० भाग साफ़ सफ़ेद बालू, १२ भाग कारबोनेट आफ़ लाइम (खड़ियो), ५० भाग कारबोनेट सोडा, १०० भाग क्रौन ग्लास के टुकड़े।

(ख) ७२० भाग बालू सफ़ेद, ४२० भाग उमदा सोडा, ८० भाग चूना, २५ भाग शोरा, (Plate glass) कांच के टुकड़े ४२५ भाग।

(३) बोहेमियन ग्लास (Bohemian glass)—पोटाश, सिलिका (बालू) व चूने के संयोग से बनता है।

(४) बोतल का कांच (Bottle glass)—सोडा, सिलिका और चूने के संयोग में थोड़ा पोटाश, सोडा, लोहचून मेंगनीज़ और बरीटा (Baryta) मिलाकर तयार किया जाता है।

नुसखा—१०० भाग बालू, ३० भाग सोडा, ४० भाग लकड़ी की राख, २०० भाग कुम्हार की मिट्टी, ४२५ भाग कांच के टुकड़े।

जिस रेत में लोहे का अंश रहता है उसका कांच हरा होता है इसलिए संढ़ (Oxide of Manganese) मिलाकर लोहे का असर मार देते हैं। हिन्दुस्तान में इसके कारखाने खुलने लगे हैं।

एक क़िस्म का कांच 'सोल्युब्ल या वाटर ग्लास' (Soluble or Water glass) कहलाता है और इस तरह तयार होता है कि २०० ग्रेन उमदा बारीक बालू और ६०० ग्रेन 'कारबोनेट आफ़ पोटाशा' (Carbonate of potassa) दोनों मिलाकर एक घरिया में गलाने से बनता है। इसे 'सिलिकेट आफ़ पोटाशा या आयर्न प्लेट' (Silicate of potassa or iron plate) भी कहते हैं।

Glaube'rs Salt (ग्लॅाबर्स साल्ट)—खारी नोन, खारी नमक। इसे 'सलफ़ेट आफ़ सोडा' (Sulphate of Soda) भी कहते हैं।

हिन्दुस्तान की ज़मीन में 'रेह' में यह मिला रहता है। इसके निकालने के दो तरीक़े हैं एक 'आबी' और दूसरा 'जारिया'। बिहार में खारी नमक खेत की मट्टी को पानी में घोल कर निथरे पानी को औटाने से निकाला जाता है, यह पटना खारी के नाम से मशहूर है और खालों पर मला जाता है जिस में वह सड़े नहीं या उन में कीड़े न लगें। साफ़ किए हुए खारी नमक को चमरा-खारी कहते हैं। संयुक्त प्रांत में भी यह बनाया जाता है।

इसी खारी नमक से 'कारबोनेट आफ़ सोडा' (Carbonate of Soda) बनता है। अब गंधक के तेज़ाब और मामूली नमक से खारी नोन ज्यादा बनाया जाता है और उस से कारबोनेट आफ़ सोडा तयार किया जाता है। दवा में खाने के लिए जब इसे बनाते हैं तब 'कारबोनेट आफ़ लाइम' (Carbonate of lime) का संयोग देकर उसे और भी साफ़ कर लेते हैं। खारी नमक दस्तावर होता है।

Gloves (ग्लव्ज़)—दस्ताने। यह रेशम, सूत किंवा ऊन से बिन कर बनाए जाते हैं। उमदा कमाए हुए चमड़े के भी दस्ताने बनते हैं। सूती, रेशमी और ऊनी दस्ताने के कारखाने (Hosiery Works) कहलाते हैं। सूती दस्ताने डर्बी (Derby) और नटिंघम (Nottingham) में, ऊनी दस्ताने लीसिस्टर (Leicester) में खास कर के ज्यादा तयार होते हैं। चिर्मीदस्ताने, भेड़, मेमने, हरिन, बकरी वग़ैरा के उमदा पकाए और कमाए हुए चमड़े से बनाए जाते हैं। जो दस्ताने 'डाग-स्किन' ग्लव्ज़ (Dog-skin Gloves) कहलाते हैं वह कुत्ते के चमड़े के नहीं बनते बलके केप (Cape) देश की एक क़िस्म की भेड़ की खाल से तयार किए जाते हैं और सब से उमदा होते हैं। उमदा चमड़े के दस्ताने पेरिस (Paris) से आते हैं।

Glucose (ग्लूकोज़)—अंगूरी शकर। यह एक प्रकार का शक्कर है जो उद्भिज पदार्थ और जीव में पाया जाता है। पके हुए फलों में इसी की मिठास रहती है इसे 'देक्सट्रोज़' (Dextrose) या 'ग्रेप शूगर' (Grape Sugar) भी कहते हैं। जौंधरी, आलू वग़ैरा म से गंधक के तेज़ाब के संयोग से यह अलग की जाती है। शराब खींचने के लिए इस की मांग रहती है और सूखी या गीली 'ग्लूकोज़' जरमनी, फ्रांस और यूनाइटेड स्टेट में तयार की जाती है।

Glue (ग्लू)—सरेस। जानवरों की रद्दी खाल, खून, खुर, सींग और हड्डी वग़ैरा से तयार की जाती है। यह चीज़ों के चिपकाने, छापने के रोलर तयार करने वग़ैरा के काम आती है। साफ़ क़िस्म की सरेस को जीलेटीन (Gelatine) कहते हैं। सरेस कई तरह की होती है मगर तीन तरह की मुख्य गिनी जाती है:—

(१) 'स्किन या लेदर ग्लू' (Skin or leather glue) चमड़े पकाने के कारखानों में जो खाल की भैल या फुज़ले बचते हैं उन्हें चूने और पानी का संयोग देकर हवा में सुखा लेते हैं तब उसे उबालते हैं, पानी उड़ जाता है और सरेस निकल आती है। इस के सुखाने में बड़ी इहतियात दरकार होती है नहीं तो माल

बिगड़ जाता है । यूनाइटेड किंगडम में हज़ारों टन हर साल तयार की जाती है । स्काटलैंड (Scotland) की सरेस दुनियां भर में सब से अच्छी गिनी जाती है ।

(२) 'बोन ग्लू' (Bone glue)—हड्डी का कोयला (Bone coal) तयार करती वक्त हड्डी में से सरेस अलग निकल आती है । यह फ्रांस और जरमनी में बहुत बनाई जाती है ।

(३) 'फ़िश ग्लू' (Fish glue)—मछलियों की हड्डी से सरेस हिन्दुस्तान में बहुत निकाली जाती है ।

एक चीज़ 'मेराइन ग्लू' (Marine glue) के नाम से मशहूर है यह सरेस नहीं है बल्कि जहाज़ के पंदों के जोड़ बन्द करने का एक मसाला है । रबड़ को नफ़था में घोल कर लाह का चूर मिलाने से 'मेराइन ग्लू' (Marine glue) बनती है ।

सरेस और लाह मिलाकर दर्ज़ वग़ैरा बन्द करने का सीमेंट या मसाला हिन्दुस्तान में बनता है ।

सरेस को पहिले २४ घंटे तक पानी में तर करके और खूब फुला करके तब आंच पर गलाना चाहिए। जितनी पतली सरेस गली रहेगी उतना ही जोड़ मज़बूत होगा । बारबार टिघलाने से उसकी लस कम हो जाती है । सरेस में चूना, सुरखी और लकड़ी का बुरादा मिलाने से वह और भी मज़बूत पकड़ लेती है ।

नुसखे - (क) लिक्विड ग्लू (Liquid glue)—मीठा पानी १$\frac{१}{४}$ सेर, उमदा ज़र्द सरेस १ सेर दोनों को गलाकर (पानी की गर्मी से टिघलाना चाहिए) ठंडा होने पर ७ औंस शोरे का तेज़ाब मिलावे और बंद बोतल म रख ले ।

(ख) सफ़ेद सरेस १६ औंस, सफ़ेदा ८ औंस, मीठा पानी १$\frac{१}{४}$ सेर, अलकोहल ४ औंस, घुला कर गर्म गर्म बोतल में रख ले ।

मेराइयन ग्लू (Marine glue)—नफ़था में इंडिया रबड़ गला कर घुलाले फिर उसमें रबड़ की दूनी लाख मिलाले । गरम गरम धातु पर ढालकर ठंडा कर ले । जब ज़रूरत हो टिघलाकर इस्तेमाल करे

पोर्टेब्ल या मौथ ग्लू (Portable or mouth glue) - १ रतल सरेस उमदा को पानी के उबलते कढ़ाव में पानी के साथ टिघलावे और उसमें आध पाव खांड़ मिला दे और उबालता रहे जब तक कि खूब न मिल जावे । पत्थर पर ढालकर ठंडा होने दे फिर उसकी टिकियां काट ले । जब ज़रूरत हो उंगली से उसे तर करके जिसे चिपकाना हो उस पर लगा कर चिपका ले ।

Glycerine (ग्लीसरीन)—ग्लिसरिन । यह पदार्थ स्वच्छ शहद की तरह गाढ़ा और स्वाद में मीठा चरबी या तेल में पाया जाता है और चरबी को बहुत तेज़ गर्म भाप (Superlative steam) देने से ग्लीसरीन निकलती है और साबुन या मोमबत्ती के बड़े कारखानों में भी निकाली जाती है । ज़ीतून के तेल में सफ़ेदा और पानी का संयोग देने से यह सहज में निकल आती है । ग्लीसरिन बहुत से काम में लाइ जाती है. यह जल्द सूखती नहीं । चमड़े को मुलायम रखती है, सूखने या सड़ने नहीं देती, खुश्बू की चीज़ें इससे बनती हैं, काड लिवर आयल की जगह काम आती है और छींट छापने में इसकी बहुत ज़रूरत पड़ती है । डायनामाईट, नाइट्रोग्लीसरीन वग़ैरा बनाने के लिए यह एक खास चीज़ है । शराब में इसको मिलाने से उमदा 'वाईन' तयार होती है और दवा में इसका बहुत इस्तेमाल होता है ।

Gold (गोल्ड)—स्वर्ण, सोना, तिला । सुंदर ज़र्द रंग की एक क़ीमती धात। इसके सिक्के, गहने वग़ैरा बहुत बनाए जाते हैं । पहिलेही से सोना योरोप, हिन्दुस्तान और सौथ अमेरिका में थोड़ा बहुत पाया जाता है किन्तु अब लगभग इस शताब्दी के अंदर कालीफ़ोरनिया और आस्ट्रेलिया में इसकी बहुत बड़ी खान मिली है । सोना 'ढेले' [Nugget] या 'रेत' के रूप में कंकड़ या बालू के साथ में मिला हुआ पाया जाता है, इन कंकड़ों को चूर करके उस पर पानी का तरारा देते हैं जिससे हलकी चीजें बह जाती हैं और सोना या भारी कण जिसमें सोना मिला होता है बाक़ी रह जाते हैं । कालीफ़ोरनिया वग़ैरा में सोना 'क्वार्ट्ज़' पत्थरों की चट्टानों में मिला हुआ पाया जाता है । पहाड़ की चट्टानें मशीनों से तोड़ी या खोदी जाती हैं और उनको चूर करके

पारा मिलाकर या उसे सीसे के साथ जलाकर उसमें का सोना अलग कर लेते हैं, प्रायः ऐसा भी होता है कि पहाड़ों की दरारों में खालिस सोना जमा रहता है। 'प्लैटिनम' (Plaitnum) धात और 'इरिडियम' [Iridium] धात के बाद सोनाही सब धातों से भारी है। स्वच्छ जलसे सोना १९.३ गुना भारी होता है। यह सब धातुओं से ज्यादा पीट कर बारीक पत्र या पत्ती याने वर्क और महीन तार बनने के योग्य है। इसका वर्क इतना पतला किया जा सकता है कि उसमें प्रकाश छन कर बाहर निकल आ सकती है और इसकी तार इतनी बारीक बन सकती है कि लगभग ७ रत्ती सोने की २००० गज़ की तार बनाई जा सकती है। सोना नर्म धातू है मगर ताम्बा या चांदी का थोड़ा मेल देकर वह सख्त बनाया जा सकता है, ऐसा सोना घिसता कम है। बिलकुल खालिस सोने को २४ 'किरात' का सोना कहते हैं और मेल मिला देने पर जितना हिस्सा खालिस साफ़ सोना होता है उतनी ही 'करात' का सोना कहलाता है जैसे २२ भाग सोना और २ भाग ताम्बा मिला रहने से २२ 'करात' का सोना कहलाता है। सोने पर कोई तेज़ाब असर नहीं करता—गंधक, शोरा या नमक के तेज़ाब में यह नहीं गलता—अलबत्ता जब २ भाग नमक और १ भाग शोरे का तेज़ाब मिला रहता है तब सोना उसमें आंच देने से गल जाता है, इस मिले तेज़ाब का नाम 'एकुवा रेजिया' [Aqua regia] याने [शाही या राजा तेज़ाब] है। सोने का खास गुण यह है कि उस पर ज़ंग या कोई धब्बा हवा या पानी के असर से कभी नहीं लगता। विद्युत की गर्मी का यह बहुत अच्छा संचालक या बाहक (Conductor) है और खुद भी यह बड़ी तेज़ आंच में गलता है। उक्त 'शाही तेज़ाब' में सोना गलाकर तेज़ाब का कुछ अंश भाप द्वारा उड़ा दिया जाता है और बाकी बचे हुए तेज़ाब में गले हुए सोने को 'क्लोराइड आफ़ गोल्ड' (Chloride of gold) कहते हैं। यह फ़ोटोग्राफ़ी में छायाचित्र को पक्का करने के लिये जिसे 'टोनिंग' (Toning) कहते हैं, काम आता है।

हिन्दुस्तान में सोना थोड़ा थोड़ा प्रायः सभी सूबों में मिलता है परन्तु मैसूर और हैदराबाद की खानों से ज्यादा निकाला जाता है।

रियासत निज़ाम, धारवार और इरावदी नदी के किनारे से सोना बहुत मिलता है। सन १९०७ में ५५७६८६ औंस सोना मालियति ३१९०१३४०) का और सन् १९०८ में ५६७७८० औंस सोना क़ीमती ३१६६८७०५) का निकाला गया। इन अददों में मीरकीना [बर्म्हा] की खान का निकला सोना भी शामिल है।

हिन्दुस्तान में सोना निकालने की मशहूर कम्पनियों के नाम यह हैं [१] बालाघाट गोल्ड माइनिंग कम्पनी, [२] च्याम्पियन रीफ़ गोल्ड माइनिंग कम्पनी, [३] कारोमंडल गोल्ड माइनिंग कम्पनी, [४] ऊरीगम गोल्ड माइनिंग कम्पनी, [५] मैसूर रीफ्स कम्पनी, [६] मैसूर गोल्ड माइनिंग कम्पनी, [७] दि न्यू केम्पिनकोट गोल्ड फ़ील्ड, [८] नाइन रीफ्स कम्पनी, [९] नन्दी दुर्ग कम्पनी, [१०] ओरियंटल गोल्ड माइनिंग कम्पनी, [११] रोड ब्लाक गोल्ड माइनिंग कम्पनी, इत्यादि और भी कई कम्पनियां हैं।

रियासत मैसूर में ज़िला कोलार से ही सोना पाया जाता है। मैसूर व हैदराबाद की खानों से सन १९०३ में यहां से ३,४२,६०,०००) का, सन १९१० में ३,२४,८०,०७०) का निकाला गया था। मगर कुल बृटिश इंडिया से सन १९०९ में ३,३०,७२,९९०) का और सन १९१० में ३,३०,३७,२९० का निकला था। इस में से बहुत ज्यादा हिस्सा बिलायत भेज दिया जाता है जहां गलाकर और साफ़ करके उनके पासे तयार होते हैं। बाहर से यह बहुत आया करता है।

हिन्दुस्तान में हर साल कितना सोना खपत होता है उसका पता नीचे लिखे व्योरे से लगेगा। कई साल का व्योरा अन्दाज लगाने के लिये दिया जाता है। नीचे लिखे रक़मों को हजार गुनी करके पढ़ना चाहिये याने ००० (तीन सिफ़िर) बढ़ाकर :—

जो बृटिश इंडिया से बाहर गया।

सन्	आमदनी		निकासी खान + रवानगी		बच रहा
१९०६-७	१,८५,३२४ रु०	—	(३२३३७ + ४४३६)	=	१,८०,८९८ रु०
१९०७-८	२,०७,५२६ „	—	(३१४६९ + २३७०)	=	२,०५,१४६ „

१९०८-९	८४,०४२ रु० — (३१७६६ + ८७२२) =	७५,३२० रु०
१९०९-१०	२,५०,३१० " — (३२५०२ + १०१३) =	२,४९,२९७ "
१९१०-११	२,७८,९१० " — (३२२६३ + ६८९१) =	२,७२,०१९ "

इन अंकों में सोने के सिक्के भी शामिल हैं। इन में सोने के पासों की मालियत का ब्योरा :—

सन्	आमदनी	रवानगी	बाक़ी जो रह गया
१९०९-१०	१०,९२,८०,००० रू०	५,२८,८३,००० रू०	५,६३,९७,०००
१९१०-११	१४,७२,५२,००० "	३,३१,२०,००० "	११,४१,३२,०००

हिन्दुस्तान में सोने से ज़ेवरात, कलाबत्तन, किम्ख़ाब वग़ैरा बहुत बनाये जाते हैं। सोने के वर्क़ व भस्म बतौर पुष्टई के खाये भी जाते हैं और स्वर्ण के योग से वैद्यक में क़ीमती क़ीमती और बड़ी उपकारी ओषधियां तयार की जाती हैं।

चंद मुफ़ीद नुसख़े :—

(१) नक़ली सोना—१०० भाग ख़ालिस ताम्बा, १७ भाग रांगा, ६ भाग मगनीशिया, ३·६ भाग साल अमोनिया (नौसादर), १·८ भाग चूना, ९ भाग टारटार (मामूली)। ताम्बा गलाकर मगनीशिया मिलावे तब नौसादर, चूना और टारटार अलग अलग मिलावे फिर रांगा थोड़ा थोड़ा करके डाले और सबको चलाकर ढांप दे आध घंटे तक। ऊपर की मैल कांछ कर ढाल ले।

(२) तिलाई रोशनाई—२४ अदद सुनहरी वरक़, ब्रौंज़ गोल्ड ½ औंस, ३० बूंद स्पिरिट शराब, ३० ग्रेन शहद ख़ालिस, ४ ड्राम गोंद, बरसाती पानी ४ औंस। इन सब को खरल करके हल करे।

(ख) सोने के वरक़ को शहद में खरल करके धो डाले फिर गोंद के पानी में हल करे यह अबरी वग़ैरा सुनहरा करने के काम की चीज़ है।

(३) सोने की चीज़ का टांका दूर करना—एक प्याले में शोरे का तेज़ाब रखकर उसमें वह चीज़ डाल दे और ९० डिगरी की धीमी

अंच पर गरमाहट में २ घंटे तक पड़ा रहने दे। सोना तो न गलेगा और टांकों को तेज़ाब खा जायगा।

(४) सुनहरी बुकनी बनाना—सोने के वरक़ को शहद (Virgin honey) के साथ इतना खरल करे कि वरक़ पिस जाय। इसे पानी के प्याले में डालकर चम्मच से चलावे जिसमें शहद सब पानी में घुल कर छूट जाय और बुकनी नीचे बैठ जाय। दोबारा फिर पानी से धोकर बुकनी सुखा ले।

(५) फ़ाइन गोल्ड (Fine gold)—३ भाग शुद्ध सोना, १ भाग चांदी मिलाकर बनता है।

(६) रिंग गोल्ड (Ring gold)—४९·६० भाग गिनी का सोना, १२·३० भाग चांदी, २३·६० भाग शुद्ध ताम्बा।

(७) माक गोल्ड (Mock gold) याने बनावटी सोना—१६ भाग ताम्बा, ७ भाग प्लाटिनम, १ भाग जस्ता। मिलाकर गलावे।

(८) बिल्यू गोल्ड (Blue gold)—३ भाग सोना, १ भाग लोहा। गले हुए सोने में लोहे का तार टुकड़ा टुकड़ा डाले। तब ढाल व पीटकर इसकी तार बनावे।

(९) सफ़ेद सोना (White gold)—सोने में चांदी का मेल ज्यादा देने से बनता है।

(१०) सुर्ख सोना (Red gold)—२ भाग सोना, १ भाग ताम्बा। मिलाने से बनता है।

Gold beater's skins (गोल्ड बीटर्ज़ स्किन्ज़)—पर्चा। कुन्दीगरों का परचा या तबक़। भैंस की बड़ी अंतों को हलके पोटाश की खार में तर कर के छूरे से खुरच लेते हैं और पीट पीट कर पानी में भिगाते हैं और तान कर फैलाते हैं। फिर इन टुकड़ों में खास तरकीब से फिटकरी के पानी, 'आइसिन-ग्लास (Isin-glass) (उमदा सरेस) और अंडे की सफ़ेदी मलते या चढ़ाते हैं। फिर इन टुकड़ों के चौखूटे 'परचे' काट लेते हैं। इन्हीं परचों के बीच

में रखकर सोने के वर्क पीट पीट कर या कुंदी कर के बारीक वर्क (तिलाई वर्क) तयार करते हैं।

Gold Leaf (गोल्ड लीफ़)—सोने का वर्क़, वर्के तिला। खालिस या घटिया सोने के बारीक वर्क जो कुन्दी कर के तयार किए जाते हैं, जिसे खालिस सोने का 'वर्क़' कहते हैं, वह भी २३ क़िरात के सोने का होता है याने २४ भाग में १ भाग ताम्बा और २३ भाग सोना रहता है। इंगलैंड में इसका काम ज़्यादा होता है और हिन्दुस्तान में दिल्ली, बनारस वग़ैरा में इसका कारोबार होता हैं मगर अब कम होता जाता है। यह वर्क़ इतना बारीक बनाया आता है कि २८२००० वर्क की उंचाई एक इंच होती है।

Gold Thread (गोल्ड थ्रेड)—गुच्छली, कलाबतून, सुनहरी या तिलाई तार। ४०, ५० या ६० भरी चान्दी के 'कन्दीला' या 'पासे' पर २ या ४ रत्ती सोने का पत्तर लपेट कर उसे 'चरखा' द्वारा और 'जान्तरी' में खींच खींच कर तार बना लेते हैं, इसे गुच्छली कहते हैं। आम तौर से ५० भरी पासे से ३०० गज़ की गुच्छली तयार होती है। कन्दीलाकश लोग गुच्छली का तार खींच कर पतली तार बनाने के लिए 'तारकशों' को देते हैं। इस के बाद 'दबाकिया' लोग कई तरह की तारें चपड़ते हैं जिनके नाम बादला या किनारी बादलां, कामदानी की तार, मकैश और बतून हैं। इन बादलों से गोखरू और भिन्न भिन्न प्रकार के सलमे जैसे खारदार, मोतिया, कोरा, दबका हुआ और भोगली नाम के बनते हैं।

गोटे वाले बादले और कलाबतून से बांकड़ी, झालर, किनारी, कैतून, पैमक, कामदानी वग़ैरा तयार करते हैं।

इन सब की बिक्री हिन्दुस्तान में बहुत है। पहिले यह कारोबार इस देश में बहुत होता था परन्तु अब विदेश के आये हुए 'विलायती कलाबत्तू' के आगे यह रोज़गार भी दबता जाता है। कई लाख के विलायती कलाबत्तू अब लायन देश से केवल बनारस में आया करते हैं।

Gold Thread (गोल्ड थ्रेड)—मांमीरा, ममीरा, तीता (Coptis Teeta)।

यह पेड़ मिश्मी पहाड़ [आसाम] में होता है इसकी जड़ आंख में लगाने के अलावा बुखार के बाद कमज़ोरी दूर करने के लिये बतौर दवा के इस्तेमाल होती है। मिश्मी लोग तीता और एक खास पेड़ का गूदा मिला कर विष की तरह जंगली जानवरों को मारने के लिए भी काम में लाते हैं।

इस नाम से कई पेड़ों की जड़ें बेची जाती हैं। अफ़ग़ानिस्तान से Corydalis और एक किस्म के Geranium की जड़, मसूरी पहाड़ व हिमालय से Thalictrum foliotosum पेड़ की जड़ लाकर इसी नाम से बेची जाती है। चीन से भी एक जड़ इसी नाम की आती है। बंगाल में मिश्मी पहाड़ से और बम्बई में चीन व सिंगापुर से आती है।

Gourd (गोर्ड)—एक प्रकार की घीआ, लौकी, तूंबी। यह सूखने पर अन्दर से पोली हो जाती है और बर्तन का काम देती है। इस के तूंबे से सितार, तानपुरे, बीन इत्यादि बनाई जाती हैं।

Gram (ग्राम्)—चना, बूट, छोला, नखुद। यह अनाज हिन्दुस्तान में बहुत होता है। लोग खाते हैं और घोड़े और बैल की यह खास खुराक है। इस देश से हर साल १५,००० टन योरोप को चलान होता है।

चने की एक क़िस्म होती है जिसे 'काबुली चना' कहते हैं, इसके दाने सफ़ेद और बड़े होते हैं। इसके लगाने की बहुत कोशिश की गई मगर यह लगता कम है। काश्मीर में भी एक जाति का चना बोआ जाता है जिसे उस देश वाले तिज़ू, जवानी, सारी, कहते हैं।

बृटिश इंडिया में चने का रक़बा लगभग ११० लाख एकड़ है। इसकी सब से ज्यादा काश्त 'आगरा' प्रान्त में होती है जहां इसका रक़बा कुल हिन्दुस्तान का तिहाई है। चने की पैदावार का सालाना औसत कुल हिन्दुस्तान का लगभग ४६९००० मन है। यह विदेशों को भी चलान होता है। सन १९०८-९ में ७५७८ टन मालियती ८·७५ लाख रुपये का, सन १९०९-१० में ५३४९७ टन कीमतीं ४५·२९ लाख रु०

का और सन १९१०-११ में ४५३७२ टन मालियती ३६.२८ रु० का चलान किया गया।

Granite (ग्रेनाइट)—संग खारा। यह एक क़िस्म का कड़ा पत्थर है। इमारत में कम इस्तेमाल होता है, इसके काटने में खर्च ज्यादा पड़ता है पर पुल की कोठियां और ऐसेही काम में बहुत लाया जाता है।

Grape (ग्रेप)—Vine देखो।

Grape sugar (ग्रेप शूगर)—Sugar glucose देखो।

Graphite (ग्राफ़ाइट)—Black lead देखो।

Grass Cloth (ग्रास क्लोथ)—चीन देश की एक क़िस्म की घास से बिना हुआ बारीक कपड़ा। चीन से इसका चलान हर साल २००० मन तक होता है।

Grass Oil (ग्रास आयल)—घास का रौग़न, जैसे अरूसे का अतर, गंधबेना, खस वग़ैरा।

Grease (ग्रीज़)—घटिया चरबी। चरबी की मैल जिससे मोमबत्ति या साबुन बनाया जाय, यह कलों के पुरज़ों में चिकनाहट पैदा करने के लिए दी जाती है। 'क्यूरियर्ज ग्रीज़' (Currier's grease) एक क़िस्म की चरबी जो 'टैलो' (Tallow) और 'काड लिवर' (Cod liver) मिलाकर बनाई जाती है। गाड़ियों के धुरों में देने के लिए 'चरबी' (Tallow), 'खजूर का तेल' (Palm Oil), सोडा और पानी मिलाकर बनती है।

Grindstone (ग्रिंड स्टोन)—सानका पत्थर। एक क़िस्म का पत्थर जो (Staffordshire) से निकाला जाता है और छुरी या औज़ार की धार पर सान देने के लिए उसका सान का चाक बनाया जाता है। अब बनावटी सान का पत्थर बहुत ज्यादा बनाकर काम में लाया जाता है। बालू और 'सिलिकेट आफ़ लाइम' (Silicat of lime) मिलाकर इसे तयार करते हैं।

नक़ली खान का पत्थर इस तरह बनाया जाता है कि ३ भाग साफ़ सख्त बालू और १ भाग लाख मिलाकर सान ढाल ले। बालू की जगह मानिक-रेत भी दी जाती है। छुरा, छुरी वग़ैरा पर सान देने लायक़ चीज़ तयार हो जाती है।

Ground nuts (ग्रौंड नट)—मूंगफली, चिनियाबादाम, भुईंचना, भुईंमूंग। इसमें से तेल निकालने के लिए यह बोई जाती है और इसकी फलियां भून कर खाई भी जाती है। इसका तेल ज़ीतून की तेल की जगह काम में लाया जा सकता है। हिन्दुस्तान में इसकी काश्त अब बढ़ रही है। इसके बोने का रवाज अब संयुक्त प्रान्त में भी खूब बढ़ रहा है। इस 'अर्थ नट' (Earth nut), 'पी नट' (Pea nut), 'पिंडार' (Pindar), 'मनकी नट' (Monkey nut), 'कटजंग' (Katjang), 'चाइनीज़ नट' (Chinese nut), इत्यादि भी कहते हैं।

Guano (गुआनो)—समुद्री या और दूसरे क़िस्म के परिन्दों की बीट या गुह जो जमीन में बहुत काल तक पड़ा रहकर मट्टी के ढेर सा हो गया हो, प्रायः टापुओं पर जहां समुदरी चिड़ियां बहुत बैठा करती हैं सैकड़ों वर्ष तक की जमी हुई बीट सूख जाती है। इससे बनावटी खाद तयार की जाती है। यह पासिफ़िक समुद्र के टापुओं के किनारे बहुत मिलती है।

Guava (गुआवा)—अमरूद, अमरूत, प्यारा। इसका फल मीठा और लाभकारी है। इस पेड़ की लकड़ी सख्त, मज़बूत और चकनी होती है और खराद के कामके लिए इसकी बहुत क़दर होती है।

Gum (गम)—गोंद। कई क़िस्म के पेड़ों में से जो मद या लसदार रस या दूध निकलकर जम जाता है उसे गोंद कहते हैं। बहुत सी गोंद वास्तव में राल होती है। राल और गोंद में फ़र्क यह है गोंद पानी में घुल जाती है और राल पानी में नहीं घुल सकती बल्के स्पिरिट या तारपीन वग़ैरा में घुलती है। भिन्न भिन्न गोंद के गुण भी भिन्न २ हैं, मगर गोंद की तीन मुख्य क़िस्में हैं यह

(१) एक वह कि जिस्में 'अराबीन' (Arabin) याने वह तत्व हो जो कीकर की गोंद में रहता है, (२) दूसरी वह जिसमें 'बसोरिन' (Bassorin) हो और (३) तीसरी वह जिसमें राल का अंश हो। गोंद ज्यादातर हिंदुस्तान और अफ़रिका से रवाना हुआ करती है। अब कई क़िस्म की नकली गोंद 'माड़ी' (Starch) से बनाई जाने लगी हैं जो छींट छापने या काग़ज़ चिपकाने के काम में लाई जाती है।

(१) कीकर या बबूल की गोंद (Gum arabic=गम अरेबिक)

(२) कतीरा (Tragacanth) इस गोंद का भी ज्यादा व्यापार होता है।

(३) पलास की गोंद।

(४) अम्बूरी गोंद (Amritsor gum)।

(५) 'गम सेनेगल' (Gum Senegal) यह फ्रेंच कालोनी सेनेगल से आती है, और इसी गोंद को असल में Gum arabic कहते हैं।

(६) हशब (Turkey gum or Kordofan)।

(७) धावरा इत्यादि।

Gum, British (बृटिश गम)—बिलायती गोंद, डेक्सटरीन, नशास्ता (Starch) को सुखाकर २१० डिगरी को आंच में कई दिन तक आंच देने से यह तयार हो जाती है और यह बाजार में 'डेक्सट्रीन' (Dextrin) के नाम से बिकती है।

Gum resin (गम् रेज़िन)—ऐसी गोंद या राल जो पानी में भी घुले और अलकोहल में भी, अथवा कुछ पानी में और कुछ अलकोहल या ईथर में घुले जैसे हींग, मुसब्बर, गम्बोज इत्यादि।

Gun Cotton (गन काटन)—यह बड़ी ज़ोर से भभक उठने वाली चीज़ है जिससे बड़े बड़े पहाड़ों की चटानें और खानें उड़ाकर खोदी जाती हैं। अब जिस तरकीब से यह तयार की जाती है उसमें इतना डर

नहीं रहा और न इसको रखने में ज्यादा डर है जितना की पहिले रहता था।

रूइ के रद्दी रोएं को खार में उबालकर उसमें की चिकनाहट साफ़ करली जाती है फिर चोथनेवाले मशीन (Teasing Machine) से रोएं खिला लिए जाते हैं और तब उनके बराबर बराबर कतरने काटकर बनाई जाती हैं, इनको ३ भाग गंधक और २ भाग शोरे के तेज़ाब के घोल में तर करते हैं और निकालकर धो डालते हैं, फिर इसको दबाकर छोटी छोटी टिकिया बनाकर रखते हैं। बारूद से इसकी क़दर इसलिए ज्यादा है कि यह गीली भी भभक उठती है और ज़रा भी देर नहीं होती और इसमें धूआं नहीं होता। यह पानी के अंदर भी काम देती है।

Gunjah (गांजा)—गांजा। यह भंग के क़िस्म के पेड़ की कली है। इसे इस देश में तमाकु की तरह पीते हैं. इसका नशा तेज़ होता है और पूरे चूंगी लगने पर भी इस देश में इसका इस्तेमाल कम नहीं हुआ। दीनाजपुर, राजशाही व बोगरा ज़िला में खासकर बहुत उपजाया जाता है। ओड़ीसा, मालाबार, मध्य प्रदेश में भी बोआ जाता है। गांजा तीन तरह का बनाया जाता है:—

(१) चापट गांजा—कली को पैरों से दबा दबा कर चपटा कर लेते हैं (२) गोली गांजा—कलियों की गोलियां बनाइ जाती हैं (३) चूर गांजा या रोड़ा—यह चूरा बटोर लिया जाता है। बंगाल का गांजा 'बालूचर' ग्वालियर और मध्य प्रदेश का गांजा 'पाथर' कहाता है। इसके बोने या बेचने के लिये लाइसेंस लेना पड़ता है। इसकी कुल काश्त का रकबा लगभग ६००० एकड़ है।

Gunny Bag (गनी ब्याग)—बोरा, विलायती टाट की बोरियां। पट सन के बोरे या थैले। इसका कारोबार बंगाल में बहुत होता है। इस व्यापार को अभी ५५ साल नहीं हुए तौ भी इसने इतनी तरक्की कर ली है कि बंगाल में २० कारखाने इसके हैं। पटसन के थान और बोरे करोड़ों रूपए के हर साल विदेशों को रवाना होते हैं इसका ब्योरा ५ साल का नीचे दिया जाता है।

सन्	बोरा		थान	
१९०५—६	६,०७,८४,०००	रू०	६,३०,५०,०००	रू०
१९०६—७	७,३४,७२,०००	,,	८,२५,८८,०००	,,
१९०७—८	८,४७,५१,०००	,,	९,६९,२९०००	,,
१९०८—९	७,७६,६५,०००	,,	७,८९,०२,०००	,,
१९०९—१०	८,६०,९४,०००	,,	८,४३,०८,०००	,,

हिन्दुस्तान में सन १९०४—५ से इसके कारखानों में बहुत तरक्की हुई है जैसा कि नीचे लिखे व्योरे से मालूम होगा।

सन्	तकले	करघे
१९०४—५	४,०९,१७०	१९,९९९
१९०५—६	४,५३,१६८	२१,९८६
१९०६—७	५,२०,५०४	२५,२८४
१९०७—८	५,६२,२७४	२७,२४४
१९०८—९	६,०७,३५८	२९,५२५
१९०९—१०	६,६६,३४८	३२,४५९

Gun-powder (गन-पौडर)—बारूद। आतशबाज़ी व बन्दूक वग़ैरा के लिए जो भभक उठने वाला मसाला इस्तेमाल किया जाता है उसे बारूद कहते हैं। यह शोरा, गंधक, और कोयला मिलाकर बनता है। इन तीनों की मिक़दार हर मुल्कों में जूदी जूदी है, पर इंगलिस्तान में ७५ भाग शोरा, १५ भाग कोयला और १० भाग गंधक रहती है। लेकिन शिकार के लिए जो बारूत बनती है उसमें ७७, १४ और ९ भाग यथा क्रम तीनों चीजें मिलाई जाती हैं। यह सब मसाले साफ़ और बेमेल होने चाहिये। बारूत के पीपे सौ सौ पौंड (रतल) के आते है। शोरा इस काम के वास्ते हिन्दूस्तान से, गंधक सिसली देश से और कोयला झाऊ की लकड़ी का हालेंड देश से जाता है।

इसका व्यापार बिदेशों में नहीं है। अपनी अपनी बारूत हर देश में बनाई जाती है।

Gurjun Balsam (गुर्जन बालसम)—गुरजन वा गरजन का तेल। इसे

'उड आयल' (Wood oil) या कनीन आयल (Kanyin oil) भी कहते हैं। गुरजन या कनइल नाम का पेड़ इष्टर्न बंगाल, चटगांव, बर्म्हा और अंडमान टापू में होता है। यह पेड़ कई क़िस्म का होता है जैसे लाल कनइल, सफ़ेद कनइल वग़ैरा। इस पेड़ की जड़ के पास पछने लगा कर आग लगा देते हैं, तेल निकल कर नीचे गड्हे में बटुर जाता है। जिल्द की बीमारी, खुजली वग़ैरा में लगाने से फ़ायदा होता है। बूट की वारनीश भी बनती है और काठ पर मल देने से दीमक नहीं लगती। इसकी वारनिश भी बनाते हैं।

Gutta Percha (गटा पर्चा)—गटा परचा। यह भी एक प्रकार की रबड़ है मगर फ़र्क इतना है कि रबड़ (गुण वाली) स्थिति स्थापक होती है यानें खींचने पर बढ़ घट सकती है मगर गटापरचा खींचने से नहीं बढ़ता। यह नाम अंगरेज़ी लफ़्ज़ नहीं है बल्के माल्यन् देश का लफ़्ज़ है और अंगरेज़ी में इस्तेमाल होने लगा है। माल्यन् भाषा में 'गटा' कहते हैं गोंद को और 'परचा' उस पेड़ का नाम है जिसमें से यह गोंद निकलती है। यह दूध कई क़िस्म के पेड़ से निकाला जाता है और इसका व्यापार हिन्दुस्तान में बढ़ सकता है। इस वक्त सुमात्रा, बोरनियो वग़ैरा टापू में यह चीज़ बनती है। पहिले यह गोंद या दूध कुछ लाल रंग का होता था और साफ़ करने पर धुंधला सफ़ेद रंग का हो जाता है। ठंड पाकर यह लकड़ी की तरह कड़ी हो जाती है मगर गरमी से मुलायम हो जाती है, 'बिनज़ाइन' (Benzine) और 'बाईसलफ़ाइड आफ़ कारबन' (Bisulphide of Carbon) में घुल जाती है। इसमें से विद्युत का प्रवेश नहीं होता इस लिए इसका लेप विद्युत तार पर प्रायः दिया रहता है। इसकी अनेक चीज़ें बनती हैं। इसकी मांग बढ़ती जाती है। खास करके गटापरचा माल्य पेननशूला, सिंगापुर और उस इष्ट इंडिज़ टापुओं से बहुत चलान होकर जाता है। गटापरचा का व्यापार खास करके इंगलेंड में होता है। नीचे लिखे पेड़ों से यह गोंद निकाली जा सकती है। हिन्दुस्तान में इसका कारोबार जारी होना चाहिये:—

(१) सपोटा—यह बंगाल मे बहुत होता है।

(२) चटवन—इसकी गोंद कदाचित गटा पुलई (gutta pulei) कहलाती है जो सिंगापुर से आती है।

(३) मदार या आकंद—हिन्दुस्तान में बहुत होता है।

(४) कट्टीमंदु—हिन्दुस्तान के दक्खिन भाग में होता है।

(५) पोचोटी—कनारा और दक्खिन में बहुत होता है। इसकी गोंद कुछ घटिया गिनी जाती है।

(६) ताली, सिलकुरता—कछार, चिटगांव, पेगू वगैरा में यह पेड़ होता है।

इसी प्रकार और भी कई पेड़ हैं जिनकी गोंद से गटापरचा बन सकता है।

गटा परचा की बारनिश भी बनती है:— आध पाव गटापरचा लेकर गर्म पानी में साफ़ करे (मैल सब छुड़ा दे) फिर १ रतल रेक्टीफ़ाइड रोज़िन, आयल (साफ राल के तेल याने तारपीन) में मिला कर एक सेर अलसी के तेल की बारनिश मिलावे और उबाल ले।

Gypsum (जिपलम्)—कुलतार, हरसोठ, कर्पूरसिलासित, सुरमासफ़ेद। यह एक खनिज पदार्थ है जो बहुत मिलता है इस का रंग सफ़ेद या ज़र्दी मायल होता है। इस से प्लास्टर आफ़ पेरिस बनाया जा सकता है। जो पत्थर संगमरमर की तरह सफ़ेद होता है उसे 'अलाबास्टर' (Alabastar) कहते हैं, जो स्वच्छ और क़लमी होता है, उसे 'सेलेनाइट' (Salenite) कहते हैं और रेशेदार पत्थर को 'सेटिन स्पार' (Satin Spar) कहते हैं। जड़त का काम या आरायशी चीज़ें इसकी बनाई जाती हैं, चूंकि यह सहज में खुरचा जा सकता है इसलिए ज़्यादा काम में लाया जा सकता है। इस का चूरा अच्छी खाद का काम देता है। इसे भट्ठी में जलाकर और पीस कर 'प्लास्टर आफ़ पेरिस' (Plaster of Paris) बनाया जा सकता है। 'प्लास्टर आफ़ पारिस' में पानी मिलाने से वह सूख कर सख्त हो जाता है। प्लास्टर आफ़ पेरिस से एलक्ट्रोटाइप के सांचे, रबड़ की मोहर के सांचे बनाए जाते हैं। शीशे और धात को जोड़ने के काम में भी आता है।

H.

Haberdashery (हेबरडेशरी)—बिसाती बाना। सूत, धागा, सूई, पेचक, फ़ीते क़ैंची, चाक़ू वग़ैरा बेचने के काम को बिसाती काम कहते हैं और ऐसी चीज़ों को बिसात बाना कहते हैं।

Hæmitite (हेमीटाइट)—लोहाश्म। यह एक खनिज पदार्थ है जिस में से लोहा बहुत ज़्यादा करके निकाला जाता है। यह गेरू के तरह का लाल पत्थर होता है और इस में से शुद्ध लोहा निकलता है। यह इतना कठोर होता है कि चाक़ू की नोक से उसे छील नहीं सकते अलबता जो ज़्यादा चिकना न हो उस में. ज़रा सी खराश पैदा हो सकती है। काले रंग का लोहाश्म प्रायः बहुत चिकना और चमकीला होता है उसे 'स्पेक्यूलर आयर्न' (Specular iron) याने 'दर्पनी लोहा' कहते हैं। इस से शुद्ध उमदा लोहा निकलता है।

Hair (हेयर)—बाल, मनुष्य के बाल, केश। मनुष्य के बाल का व्यापार भी कम नहीं है। फ्रांस, जरमनी, हिन्दुस्तान, चीन वग़ैरा से यह बहुत बिलायत जाता है। आस्ट्रिया में इस काम की बड़ी बड़ी कम्पनियां हैं जो जंगलियों के लम्बे लम्बे बाल अच्छी क़ीमत देकर खरीदा करती हैं। मनुष्य के भेस बदलने के बाल, मोंछ, डाढ़ी, घड़ियों की चेन, गंडे, पारांदे वग़ैरा बनाए जाते हैं। इन के आलावा बकरों के बाल, घोड़े की पूंछ के बाल याने 'हार्स हेयर' (Horse Hair), सूअर के बाल याने 'पिग्ज़ ब्रिस्ल' (Pig's Bristle) के भी व्यापार बहुत होते हैं।

कूंची याने ब्रश वग़ैरा बनाने के लिए भी कई जानवर के बाल या रोंए काम आते हैं जिन से चित्र इत्यादि बारीक काम बनाने के ब्रश तयार किए जाते हैं। बालों को एक दिन रात फिटकरी के पानी में तर करके उनकी चरबी साफ़ कर लेनी चाहिए और साफ़ पानी में खूब धोकर बालों की एक एक 'जटा' चुटकी से सूत कर निचोड़

ले और एक रकाबी में खड़ा बाल सजा दे। रकाबी को नीचे से ठोकने पर सब बाल बराबर सज जायंगे इस तरह से छोटे और बड़े बाल सहज में छांट लिए जा सकेंगे।

Hardware (हार्डवेअर)—लोहे की चीजें। खासकर छुरी, चाकू, कैंची, लोहे की तश्तरियां वगैरा।

इंगलिस्तान में इन चीज़ों के बनाने की शेफील्ड और बरकिंघम खास जगह हैं।

Hare (हेअर)—ख़रगोश। इन की कई जाति हैं। इन की खाल और बाल की बहुत मांग रहती है। इन की खाल कनाडा से बहुत आती है।

Harmonium (हारमोनियम्)—हारमोनियम् बाजा। इस की मांग बढ़ गई है। इंगलिस्तान व फ्रांस से उमदा हारमोनियम् आते हैं अब कलकता व बम्बई में भी बनने लगे हैं।

इस बाजे में बक्स के अन्दर पीतल की पत्तियां लगी रहती हैं जो हवा देने पर स्वर देती हैं। हर एक स्वर के लिए हाथीदांत वा लकड़ी के परदे लगे होते हैं जिनके दबाने से वही स्वर बजता है। हारमोनियम् दो तरह के होते हैं। (१) हाथ के भाती देने से और (२) धौकनी चलाने वाले।

Harness (हारनेस)—घोड़े के साज़। अब यह ज़्यादातर चमड़े से बनते हैं। यह लाखों रुपए के हिन्दुस्तान में तयार होते हैं और लाखों के विदेशों से बन कर आते हैं।

(१) हारनेस की पालिश—४ औंस सरेस, १५ छटांक सिरका, २ औंस गोंद कीकर, ५ छटांक काली स्याही और २ ड्राम आइसिनग्लास। एक बरतन में सरेस के टुकड़े रख कर उस में लगभग १० छिटांक सिरका मिलाकर तर होने दे। गोंद और स्याही अलग घुला के आइसिनग्लास को थोड़े से पानी में धीमी आंच पर अलग घोले। सरेस को धीमी आंच पर चढ़ा कर बाक़ी सिरका मिला के, उसे चलाता रहे जिस में वह पेंदी में न लगे और उबलने भी न पावे,

फिर गोंद मिलावे। कुछ ठहर कर आइसिनग्लास मिला ले और उतार कर रख ले। थोड़ा टिघला कर काम में लावे। यह पालिश बूट पर भी काम देगी।

(२) ज़ीन की काली स्याही—१ पाव शीरा या जूसी, १ औंस काजल, १ चम्मच यास्ट और एक एक औंस खांड. ज़ीतून का तेल, कतीरा और आइसिन-ग्लास और थोड़ा गोबर। इन सबको मिलाकर इसमें $1\frac{1}{4}$ सेर बीयर मिलाकर आंच के आगे १ घंटे तक पड़ा रहने दे।

(क) ८ भाग शीरा, १ भाग काजल, १ भाग मीठा तेल, १ भाग बबूल की गोंद और १ भाग आइसिन ग्लास और ३२ भाग पानी, इन सबको गरम करे और ठंडा होने पर एक औंस शराब की स्पिरिट मिलाकर काम में लावे। जब यह मसाला जम जाय तो गर्म पानी से गरमाकर ढीला कर ले।

(३) ज़ीन या काठी साफ़ करना—नर्म साबुन और ठंडे पानी से धो कर गर्द वग़ैरा साफ़ करे फिर ऊनी कपड़े से साबुन उस पर रगड़ दे और थोड़े से पानी में Hay saffron मिलाकर साबुन रगड़ने से पहिले पोत दे तब ऊनी कपड़े से रगड़कर ब्रश से मोम लगादे।

(४) बरसाती लायक़ वाटर-प्रूफ़ घोड़े के साज़ का मसाला—२ औंस स्याह सरेस चीनी के प्याले में रखकर धीमी आंच पर धरे, जब घुल जाय तब उस में ३ औंस मोम मिलावे और जब यह भी गल कर मिल जाय तब उसमें $\frac{1}{2}$ औंस उमदा काजल और $\frac{1}{2}$ औंस नीला रंग प्रशियन ब्लू (Prussian Blue) पीस कर मिलावे और खूब घोल दे। इसके बाद इतना तारपीन का तेल मिलावे कि पतली लेई सी बन जाय, तब ठंडा कर ले।

Hartshorn (हार्ट्स हॉर्न)—हरिन की सींग। सींग के बुरादे से कशीद करके अर्क़ निकाला जाता है जो 'आयल आफ़ हार्ट्स हॉर्न' (Oil of hartshorn) कहलाता है, इसकी खार को 'साल्ट आफ़ हार्ट्सहार्न' (Salt of hartshorn), इसके मद्यसार को 'स्पिरिट आफ़ हार्टसहार्न' (Spirits of hartshorn) कहते हैं। 'अमोनिय' (Ammoni)

के घोल को भी 'स्पिरिट आफ़ हार्ट्सहार्न' [Spirits of hartshorn] कहते हैं और यह बालू नौसादर में चूना मिलाने से निकलता है। आजकल अमोनिया गेस के कारखानों में बनाया जाता है।

Hat [ह्याट]—अंगरेजी टोपी। प्रायः यह ऊनी या सूती कपड़े, नमदे, घास या रेशमी कपड़ों की बनाई जाती हैं। खरगोश, ऊदबिलाव या ऊंट के बाल से [नमदा] फ़ेल्ट बनाकर ह्याट बनाने में इस्तेमाल किया जाता है।

Hay [हे]—सूखी घास। तयार घास को काटकर और जमा करके सुखा लेते हैं। यह घोड़े, बैलों की खुराक है। इसका इस्तेमाल फ़ौज में ज्यादा है। आम तौर पर लोग ताज़ी घास इस्तेमाल करते हैं।

Hazel nut [हेज़ेल नट]—इसका तेल मुसव्वरी और खुशबू के काम में आता है। यह टर्की देश से बहुत आता है।

Hematite [हेमेटाइट]—Haematite देखो।

Hemp [हेम्प]—सन, सनई, अम्बारी, गांजा या भांग के पेड़ की छाल के रेशे। सन, सनई वग़ैरा के पेड़ बहुत बोए जाते हैं और उनके रेशों से रस्से रस्सियां, सूत वग़ैरा बनते हैं। सनइ के बीज से तेल निकाल कर उसका रौग़न, वारनिश वग़ैरा के कामों में लाया जाता है। हिन्दुस्तान से लगभग ६० लाख का सन् हर साल बाहर जाता है।

Henequen [हेनेक्वेन]-Sisal hemp देखो।

Henna (हेना)--हेना, मेंहदी। इसके पौधे की टट्टी बाग़ों में बहुत लगाई जाती है, पत्तियां पीसकर हाथ पैर पर लगाने से लाल रंगत आजाती है और फूलों से मशहूर अतर 'इत्र हिना' बनता है। इसकी पत्ती चमड़े पर रंग चढ़ाने के काम आती है। पत्तियों से एक क़िस्म का रंग भी निकलता है जिसकी बुकनी कत्थे और पानी के साथ मिलाकर उससे चमड़ा और ऊन रंगा जाता है।

Hides (हाइड)—खाल। बड़े चौपाओं की ताज़ी सूखी खाल या चाम को हाइड कहते हैं। यह खाल खार या नमक इत्यादि लगाई हुई या सुखाई हुई चमड़ा बनाने के काम आती है। इनका बहुत बड़ा व्यापार

होता है । इंगलैंड में खालों की बड़ी मांग र ती है । ३ लाख खाल तो हर साल वहीं के ज़िबह-खानों से निकलती है और इससे कहीं ज्यादा बाहर से आया करती है । योरोप में रूस; हालैंड, बेलजियम और इटली से खालें बहुत चलान होती हैं ।

हिन्दुस्तान में भी इसका व्यापार बहुत ज्यादा है। बिना पकी याने खाम खाल ५ या ६ करोड़ रू० कि विदेशों में जाती हैं । सन् १९०६-७ में ६,४०,९०,०००) की, सन् १९०८-९ में ४,७८,४८ ०००), सन् १९०९-१० में ५,१२,६६,०००) और सन् १९१० ११ में ५,३९,६७,०००) की भेजी गई। इसमें छोटे चौपाए जैसे भेड़, बकरी वगैरा की खाल का हिसाब शामिल नहीं है इसका ब्योरा Skins 'चिर्म' में दिया जायगा। हिन्दुस्तान की खाम खाल सबसे ज्यादा जरमनी खरीदता है ।

पकाई या बनी हुई (Tanned) खालें भी हिन्दुस्तान से बहुत रवाना होती हैं । पकी खालों के चलान का ब्योरा यह है (इसमें भी भेड़, बकरी की खाल शामिल नहीं हैं)

सन् १९०५-६	१,५४,८०,०००)
,, १९०६-७	१,७२,९६,०००)
,, १९०७-८	१,०५,५२,०००)
,, १९०८-९	१,३९,६३,०००)
,, १९०९-१०	१,४४,३९,०००)

भैंसों की खाल खास करके बहुत ज्यादा रवाना होती है ।

Honey (हनी) - शहद, मधु, । हिन्दुस्तान में यह हर सूबों में मिलता है, खास करके पहाड़ी देशों में । शहद की मक्खियां छत्ते बनाकर उसमें शहद बटोरती हैं, जो फूलों से लाती हैं । शहद की मक्खियां अब पाली जाने लगी हैं । इनके छत्ते से मोम और शहद निकलता है और दोनों की मांग खासी रहती है खास करके मोम का व्यापार ज्यादा है । शहद की मक्खियां पाल कर शहद पैदा कराने का काम पहाड़ी देहातों में खूब हो सकता है और इससे खूब फ़ायदा हासिल किया जा सकता है ।

Hoofs (हूफ्स)—चौपायों के खुर। कंघी और बटन बनाने के लिए खुरों का व्यापार बहुत होता है। इसके अलावे खुरों से प्रूशिएट आफ़ पोटाश (Prussiate of Potash) भी बनाया जाता है।

Hops (हाप्स)—हाप। यह एक क़िस्म का पेड़ है यह अभी हिन्दुस्तान में अच्छी तरह नहीं लगता। मिश्रित (मुरक्कब) चीज़ों की शराब बनाने (brewing) में यह बहुत काम आता है। इसके मिलाने से नशा तेज़ होता है। हिन्दुस्तान के बड़ी आबकारियों में भी इसका इस्तेमाल होता है और ज्यादातर बिदेश से आता है। हिन्दुस्तान में इसकी जगह पर (१) अंजीर याने सफ़ेद कीकर (२) भंग, (३) बक्खर (४) धतूरा (५) आंवला (६) कुचला वग़ैरा भी इस्तेमाल किया जाता है।

Horns (हार्न्ज़)—सींग। भैंस, भेड़, बकरे, हरिन वग़ैरा के सींग से बटन, कंघियां, दस्ते वग़ैरा अनेक प्रकार की वस्तुएं बनाई जाती हैं। सींग दो क़िस्म की होती है [१] वह जो हड्डी की होती है और [२] वह जो हड्डी की नहीं होती बलके उसमें असल सींग का तत्व रहता है जिसे 'केरातीन' कहते हैं। पहिले क़िस्म की सींगें हरिन के सींग के नाम से बिदेशों को बहुत रवाना होती हैं। दूसरी क़िस्म भी बहुत जाती है इसमें यह गुण है कि वह खास तरकीब से बढ़ाई जा सकती है, चपटी की जा सकती है और वह चिम्मड भी होती है। इन्हीं गुणों के कारण सींग चपटी बनाकर उनसे कंघी, प्याले, अरघे वग़ैरा बनाए जा सकते हैं। हर साल १६ या १७ लाख रुपए की सींग या सींग का चूर हिन्दुस्तान से बाहर जाता है। सन् १९०८-९ में १५६४०५८) और सन् १९०९-१० में १९३८३९६) का माल भेजा गया।

सींग को आंच पर तपाते हैं, जब वह नर्म होजाती है तब एक ओर से चीर या फाड़ कर शिकंजे में रख कर दबाई जाती है। शिकंजे के लोहे की चद्दर में चरबी पोती रहती है। जब तक सींग ठंडी न होजाय वह उसी तरह दबी रहती है और फिर पानी में तर करके नर्म की जाती है और ज़रूरत के मुताबिक़ काटी जाती है।